धर्म्म-ग्रन्थ-मालाका ४ था ग्रन्थ.

शान्ति और आनन्दका मार्ग.

श्रीस्वामी परमानन्द प्रणीत.

"दि वे आफ पीस एण्ड ब्लिसेडनेस"

हिन्दी अनुवाद ।

अनुवादक—

धर्मानन्द ।

मिलनेका पता—

धर्म्म-ग्रन्थ-माला कार्यालय,

बड़ाबाजार, कलकत्ता ।

प्रथमावृत्ति] जून १९२१ [मूल्य ॥)

प्रकाशक—

धर्म्मानन्द,

मजेड़ा,

नैनीताल।

पुस्तक मिलनेके अन्य पते—

(१) अद्वैत आश्रम, पब्लिकेशन डिपार्ट-मेण्ट, २८ कौलेज स्ट्रीट मारकेट कलकत्ता।

(२) हिन्दी पुस्तक एजेन्सी १२६ हैरिसन रोड, कलकत्ता।

(३) पं० रामदत्त त्रिपाठी संस्कृत टीचर, रानीखेत।

(४) लाला इन्द्रलाल साह बुकसेलर, लालाबाजार, अल्मोड़ा।

(५) मेसर्स के० डी० कारनाटक एण्ड ब्रादर्स बुकसेलर्स, तल्लीताल नैनीताल।

मुद्रक—

रिखबदास बाहिती,

"दुर्गा प्रेस"

७४, बड़तल्ला स्ट्रीट,

कलकत्ता।

समर्पण

श्रद्धास्पद, परमपूज्य, स्वर्गीय

पिताजीके श्रीचरणोंमें

यह भक्तिकी सेवा

सादर समर्पित

है।

धर्मानन्द.

निवेदन ।

स्वामी विवेकानन्दके शिष्य, अमेरिका–बोस्टन शहरके श्रीराम-कृष्ण मिशनके अध्यक्ष, स्वामी परमानन्द प्रणीत 'The way of Peace & Blessedness' नामक अँग्रेजी पुस्तकका यह हिन्दी रूपान्तर है। स्वामीजीने यह पुस्तक अमेरिकामें ही लिखी और वहीं इसका खूब प्रचार हुआ। स्वामीजीने इस पुस्तकमें आध्यात्मिक जीवनके लिये आवश्यक सभी महत्वपूर्ण विषयोंका युक्तियुक्त और उत्तम विवेचन किया है, जिनका अभ्यास निर्भयता पूर्वक, सत्यता पूर्वक, और फलाफलकी ओर ध्यान न देकर, करनेसे मनुष्य अनन्त सुख और आनन्दके साम्राज्यमें प्रवेश करता है। आशा है, हिन्दी-प्रेमी इस पुस्तकसे लाभ उठावेंगे।

इस पुस्तकमें बहुतसी अशुद्धियोंका रहना स्वाभाविक है; आशा है, उदार पाठक उनकी ओर ध्यान न देकर केवल विषय-मात्रकी ओर ही ध्यान देनेकी कृपा करेंगे।

इस पुस्तकके मूल लेखक स्वामी परमानन्दजीका मैं बहुत ही अनुगृहीत हूं, जिन्होंने अत्यन्त कृपाकर इस पुस्तकको प्रकाशित करनेकी अनुमति देकर मुझे चिरकृतज्ञ किया है।

मजेड़ा
नैनीताल।
जून १९२१

धर्मानन्द

भूमिका।

उसी ग्रंथकार द्वारा लिखित "भक्तिका मार्ग" की तरह प्रस्तुत ग्रन्थ भी अधिकांशमें उनके पत्रोंके अवतरणोंसे ही संकलित हुआ है; इसलिये इसकी भाव-भाषा ओजस्विनी और जीवित है। वेदान्तके अनुसार धर्म सदासे ही एक वैयक्तिक प्रश्न है और इसकी शिक्षा दीक्षाका उत्तम उपाय भी वैयक्तिक है। शिष्यके संशयात्मक हृदयके लिये, यह, गुरुके बुद्धिमान और प्रेमी हृदयको साक्षात उपदेश होना चाहिये, जिससे धार्मिक भावकी तुरन्त जागृति हो। वेद और क्या हैं, महत्सत्यका एक ज्ञाता है, जो हिमालयके एकान्त और सघन वनमें बैठा हुआ, जिज्ञासु और अभिलाषी शिष्यको आत्मानुभवके फल दान किया करता है और जहां कहीं यह वाणी सुनाई देती है, चाहे वह धर्म ग्रन्थका कोई सनातन शब्द हो अथवा कोई अक्षर, उससे आत्मज्ञानके प्रकाशकी कला बढ़े बिना कदापि नहीं रहती।

शान्ति और आनन्दका मार्ग सदा दृढ़ विश्वास, पवित्र हृदय और अटल भक्ति द्वारा उच्च लक्ष्यको निःस्वार्थ सेवाका मार्ग है। इसका अनुसरण करनेके लिये, मनुष्यको अपनी आत्माको अज्ञानता और उदासीनताकी निद्रासे जगाना चाहिये और ईश्वर और आध्यात्मिक जीवनकी यथार्थताका अनुभव करना चाहिये। मनुष्यको सीखना चाहिये कि किस प्रकार सत्यकी पूजा और

ईश्वर-दर्शन करना होता है, किस प्रकार प्रेम करना होता है और किस प्रकार प्रार्थना करते हुए निःस्वार्थ कार्य करना होता हैं। इन्हीं विषयोंका प्रतिपादन इस पुस्तकमें किया गया है। ये विषय इतने गहन और अमूल्य हैं, कि प्रत्येक मनुष्यको इन्हें संचय करना चाहिये ; इसलिये ये इस छोटी पुस्तकमें एकत्र करके यह पुस्तक अपने पवित्र संदेशके साथ इस सच्ची आशासे संसारको भेंट की जाती है, कि इसके द्वारा बहुत मनुष्य शान्ति और आनन्द प्राप्त करें।

देवमाता।

बोस्टन, जून १६, १९१३।

ध्यान—

हे अनन्त, सर्व श्रेष्ठ परमात्मन् !

हमें प्रार्थना करना और ध्यान करना सिखलाओ। हमारे विचारोंको इतने एकाग्र गंभीर और स्थिर करो, कि वे हमारे अन्तःकरणमें प्रवेश करें और तुम्हें जानें।

हमारे मनको इतना ऊंचा करो कि, कोई मानसिक व्यथा रह न जाय, अन्धकार दूर हो जाय और केवल प्रकाश और आनन्दका अनुभव हो।

हमें मायासे ज्ञानके प्रकाशमें ले जाओ। हमें वरदान दो कि हम तुम्हारी दैवी सत्ताको अपने अन्दर अनुभव करें।

हमारी आत्मा असत्य इन्द्रिय-निद्रासे जागरित होकर तुम्हारी वाणी सुननेमें तत्पर हो ;

हमारा हृदय क्षमा और दयासे भरपूर हो ;

शान्ति और स्थिरता हमारे समस्त अस्तित्वमें व्याप्त हो जाय।

तुम्हारी शान्ति और आशीर्वाद हमारे साथ रहे और सारे दुष्ट कर्मों और विचारोंसे हमारी रक्षा करे।

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥

———

सत्यकी पूजा

सत्यकी विजय होती है, असत्यकी नहीं, सत्यसे मार्ग मिलता है—देवताओंका वह मार्ग, जहांसे स्थित-प्रज्ञ प्राचीन ऋषि सत्यके सर्वोच्च स्थानकी ओर आगे बढ़ते हैं।

वह (पूर्ण सत्य) परम, दिव्य और अचिन्त्य है। यह उनकी कन्दरा (हृदय) में छिपा हुआ है, जो इसको यहां भी देखते हैं।

मुण्डकोपनिषत्,

उत्तम, अविनाशी और अजेयके लिये सत्य एक जीवित शक्ति है। जो सत्यकी अभिलाषा नहीं करते, वे जीवनके उद्देश्यको भूलते हैं। दीपकके सदृश सत्यके प्रकाशमें केवल सत्यमें ही मुक्तिकी खोज करो। जहां अहंकार है वहां सत्य नहीं रह सकता, किन्तु जब सत्यका प्रादुर्भाव होता है, तब अहंकारका लोप हो जाता है। इसलिये अपने चित्तको सत्यमें लीन रखो, सत्यका विकास करो, अपनी समस्त इच्छा-शक्ति इसमें लगाओ और इसको फैलने दो। सत्यमें तू सदा रहेगा। अहंकार मृत्यु है और सत्य जीवन है। सत्यपर भरोसा कर। सत्यमें विश्वास कर और सत्य जीवन व्यतीत कर।

बुद्ध.

ब्रह्म (पूर्ण सत्य) स्वयं आनन्द है; इसकी प्राप्तिसे आत्माको आनन्द प्राप्त होता है।

तैत्तिरीय—उपनिषत्.

सत्यकी पूजा

प्रार्थना ।

भगवानके आशीर्वादसे हमारा जीवन सफल हो ।

हम बलवान और अटल हों ।

सत्यके लिये हमारी भक्ति अचल हो ।

हमारा मन असत्यसे स्वतन्त्र हो ।

हम सदा सत्यका ध्यान करें ।

हमारा समस्त जीवन सत्यकी प्राप्तिके लिये हो ।

समस्त मायावी पदार्थ हमारे हृदयोंसे दूर हों ।

हमारा ईश्वरीय प्रेम सकल प्रकारके प्रेमोंसे श्रेष्ठ हो ।

हमारी बुद्धि इतनी प्रखर हो, कि कोई पदार्थ हमको न बहका सके और हम सदा ईश्वरके लिये सच्चे रहें ।

हम अपने समस्त हृदय और आत्मासे केवल ईश्वरकी सेवा कर सकें ।

हम उसको अपना एकमात्र स्वामी समझें । हम उसकी पूजा करें, अन्य पदार्थों की नहीं जो अन्धकारकी ओर लेजाते हैं ।

वह हमारी रक्षा करे, क्योंकि उसके अतिरिक्त और कोई हमारी रक्षा नहीं कर सकता ।

वह हमको अपनी शान्ति और आशीर्वाद प्रदान करे ।

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः

केवल सत्य ही रहता है। केवल सत्यको ही विजय होती है। जो सत्यकी पूजा करते हैं, केवल वे ही आनन्द प्राप्त करते हैं, अन्य नहीं। हमें सत्यको अपने जीवनका आधार बनाना चाहिये। हमें सत्यको जाननेका प्रयत्न करना चाहिये। हमको सत्य पर ही निर्भर रहना चाहिये, और हम केवल सत्यके ही वशमें हों, असत्यके कदापि नहीं। सब पदार्थ हमको सत्यकी प्राप्तिके लिये उत्तेजित करें। कोई हमको निरुत्साह न कर सके। हमारा समस्त जीवन हमारी सत्यकी भक्तिसे पवित्र हो।

केवल सत्य ही से हमारी आत्मा पूर्णरूपसे तृप्त हो सकती है। जो सत्यके सम्मुख अपने पार्थिव स्वभावका बलिदान करके खड़े रहते हैं; केवल वे ही ईश्वरके सच्चे पूजक हैं। केवल वे ही सत्यको प्राप्त करते हैं।

सत्यके एक कणका भी कभी नाश नहीं होता। सत्यको प्राप्त करनेका एक साधारण प्रयत्न भी निरर्थक नहीं होता। हमको चाहिये केवल धैर्य, उद्योग और भगवानके ऊपर अटल विश्वास। और किस पदार्थकी आवश्यकता है? केवल सत्यके लिये सत्यके दर्शनके लिये जीवन व्यतीत करना चाहिये, किसी को खुश करनेके लिये नहीं, चाहे वह गरीब हो या धनी, मूर्ख हो या बुद्धिमान। सत्य मनुष्यको निर्भय बनाता है। जब हम नहीं जानते, हम शङ्का करते हैं, हम ठहरते हैं, हमारे शब्द और कर्म निश्चयात्मक नहीं होते। परन्तु जो जानता है, उसकी यह बात नहीं। उसका एकमात्र विचार, एकमात्र उद्देश्य सत्य है;

सत्य-जीवन व्यतीत करना है। यही कारण है, कि ऋषियोंने निर्भयता पूर्वक अपने भाव व्यक्त किये हैं। सत्यकी पूजा सदा निश्चयकी शक्ति और पूर्ण निर्भयता उत्पन्न करती है।

जब कोई सत्यकी पूजा करता है, तब न अन्धकार है न बाधा है। किन्तु हमको धीरे धीरे अग्रसर होना चाहिये। हम प्रतापको नहीं देख सकते, हम ईश्वर-दर्शन नहीं प्राप्त कर सकते, जब तक हम अपनेको प्रकाश नहीं करते। हमको चाहिये धीरता, दृढ़ता और सच्चाई,—सच्चाई अपने लिये जब हम अपने लिये सच्चे हैं, तब हम अपने लक्ष्य, जीवन और सकल पदार्थोंके लिये सच्चे हैं।

\+ \+ \+ \+ \+

वे धन्य हैं जो सत्यकी सेवा और पूजा सच्चाई और निःस्वार्थ भावसे कर सकते हैं। स्वर्गीय माता सदा उनकी रक्षा करेगी। वह उनकी रक्षा क्यों नहीं करेगी? तुम जानते हो, भगवान गीतामें कहते हैं, "जो मेरी पूजा एकाग्र प्रेमसे करते हैं और अन्य विचारसे नहीं, मैं उनकी रक्षा करता हूं।" यहां तक कि भगवान उनकी पार्थिव आवश्यकताओंकी भी चिन्ता करते हैं। ये पदार्थ सत्य और वास्तविक हैं, और तुम जैसे इस जीवनको व्यतीत करोगे वैसे वैसे उन्हें प्राप्त करोगे।

एक छोटे बालकके समान विश्वास रक्खो, तब तुम सत्यको प्राप्त करोगे। तर्कसे नहीं, किन्तु विश्वाससे हम इसके समीप पहुँचते हैं। छोटे छोटे बालक विश्वास करते हैं, अपने माता पिताके

कहनेका ; और जब तक हम छोटे बालकोंके समान नहीं बनते, हम स्वर्गकी राजधानी अथवा सत्यके साम्राज्यमें कदापि प्रवेश नहीं कर सकते। बालक भयके समय माताके समीप चले जाते हैं और स्वयं कुछ करनेका प्रयत्न नहीं करते, और भक्तको भी ऐसा ही होना चाहिये। सहृदयता समस्त धर्मोंका मूल है। जब मनुष्य बड़ा होता है, वह बुराइयां देखता है ; किन्तु छोटे बालकके हृदयमें बुराईका कुछ भी भाव नहीं होता। जब हम बड़े होते हैं, संसार हममें व्याप्त हो जाता है। हमको इसे त्यागना चाहिये और बालकके समान सहृदयता पुनः प्राप्त करनी चाहिये। तब हम भगवानके साम्राज्यमें प्रवेश करते हैं।

हमको दुष्ट कौन बनाता है? जब हम भगवानको भूलते हैं और सोचते हैं कि हम शरीर हैं। किन्तु जब हम अपनी शारीरिक परिमित अवस्थाओंको भूलते हैं और सत्यतापूर्वक भगवानका पूजन करते हैं, तब हम शीघ्र धार्मिक बन जाते हैं। मुक्तिका केवल एक यही मार्ग है—अपनी परिमित अवस्थाका भूल जाना और केवल भगवानका चिन्तन करना। इस तरह निरन्तर भगवानके चिन्तनसे, प्रत्येक कार्य पूजाकी सामग्री हो जाता है। मन आकाशके समान है, कामना बादलोंके समान, और जब कामनाओंके बादल आकाशमें प्रकट होते हैं, तब इनसे ज्ञानका सूर्य ढक जाता है। इन बादलोंका उठना रोकनेके लिये, हमको अपना मन भगवानकी ओर लगाना चाहिये; तब यह सब अयोग्य इच्छाओंसे स्वातन्त्र्य लाभ करेगा। अपने लक्ष्यको जितना ही अधिक हम अपने हृदयमें रखते

हैं, उतने ही बलवान हम होते हैं। जब हम लक्ष्यको अपने हृदय की वेदीमें रखनेमें समर्थ होते हैं, तब हममें सदा शान्ति विराजमान रहेगी। इसलिये हमको सच्चाई, विचार और लक्ष्यकी निरन्तर आराधनाकी आवश्यकता है, यदि हम लक्ष्यके निकट पहुंचना चाहते हैं।

\+ \+ \+ \+ \+

धर्मका अर्थ है बिना सफलता और असफलताका विचार किये दृढ़ता पूर्वक अग्रसर होना। हमारा हृदय सरल, बालकके समान श्रद्धालु और पवित्र होना चाहिये और किसी पदार्थकी आवश्यकता नहीं है। हमको सदा लक्ष्य अपने मनमें रखना चाहिये और निरुत्साह न होना चाहिये। जबतक हम प्रयत्न नहीं करते, हम कैसे जान सकते हैं, कि हम सफल मनोरथ न होंगे? केवल इन्द्रिय-सुखके लिये इधर उधर भटकनेका अर्थ है, अशान्ति और निर्बलता। हमको समान, शान्त और चुप रहनेका प्रयत्न करना चाहिये।

किसी समय हम निरुत्साह हो जाते हैं और यह कहनेकी इच्छा होती है कि ईश्वर नहीं है। किन्तु क्या कभी हमने वास्तवमें उसको देखनेका प्रयत्न किया है? क्या हमने सच्चाईसे उसको देखनेकी अभिलाषा की है? यदि हम इच्छा पूर्वक प्रयत्न करें और फिर भी उसकी किरण मात्र भी प्राप्त न कर सकें, तब हम कह सकते हैं कि ईश्वरका अस्तित्व नहीं है। हमको स्वयं इन पदार्थोंका अनुभव प्राप्त करना चाहिये। हमारी आन्तरिक यात्रा

पूर्णरूपसे हमारे ही प्रयत्नों पर अवलम्बित है और यह अत्यन्त सहल हो जाता है जब हम अपने अनुकूल अवस्थाकी सृष्टि करते हैं। ध्यानसे हम इसकी सृष्टि कर सकते हैं। वास्तवमें अधिकांश मनुष्य सत्यको नहीं चाहते, इस लिये वे कहते हैं कि उनके पास आध्यात्मिक अभ्यासके लिये समय नहीं है। उनके पास वृथा बकवाद, आमोद-प्रमोद और सांसारिक कार्यों के लिये समय है; किन्तु वे पांच मिनट भी ईश्वरके लिये नहीं दे सकते। इस तरह वे अपनेको धोखा देते हैं और ईश्वरको भी छलनेका प्रयत्न करते हैं। किन्तु जिनको सत्यकी अभिलाषा है, जिनको वास्तविक आध्यात्मिक भूख है, वे समय पाते हैं। जब तुमने एक बार उस आनन्दका रसास्वादन कर लिया जो आध्यात्मिक विचारसे उत्पन्न होता है, तब तुम इसको त्याग नहीं सकते। एक अत्यन्त छोटा भाग आत्माकी क्षुधा तृप्तिके लिये यथेष्ट नहीं है। सत्यकी प्राप्तिके लिये दृढ़ संकल्प और पूर्ण भक्तिकी आवश्यकता है।

केवल दृढ़ चित्तवाले ही साक्षात् दर्शन प्राप्त करते हैं। जब तक मन चंचल रहता है, यह प्राप्त नहीं होता। सत्यकी किरणें दिखलाई देंगी, किन्तु दृश्य नहीं ठहरता। इसलिये, यह कहा है, जबतक हम अपने निम्नस्वभावके ऊपर विजय प्राप्त नहीं करते, सत्य प्राप्त नहीं हो सकता। आत्म-संयम और विचार अत्यावश्यक हैं। दृढ़ता समस्त विजय और वीरत्वका स्रोत है। शक्तिका अर्थ सुख है, शक्तिका अर्थ शान्ति है। जब हम अपनेमें

शक्ति अनुभव करते हैं, तभी हमारे हृदयमें सत्यका उदय होता है। दुःखका अर्थ सदा निर्बलता है, चाहे हम इसको जानें या न जानें।

\+ + + +

सत्य हृदयमें सदा वर्तमान है, किन्तु इसका जाननेके लिये आवश्यक पवित्रता और उद्यम बहुत थोड़े मनुष्य करते हैं। इस-लिये कहा है कि बहुत मनुष्य बुलाये जाते हैं किन्तु थोड़े चुने जाते हैं। "सहस्रोंमें, कठिनाईसे एक मनुष्य पूर्णताके लिये प्रयत्न करता है; और (सहस्त्रों) पूर्णताके लिये सच्चे परिश्रम करनेवालोंमें, कठिनाईसे एक मनुष्य यथार्थ रूपसे मुझको जानता है।" इसका क्या कारण है? परिश्रम करनेवालोंकी संख्या अधिक ही क्यों न हो, वे निरन्तर उद्योग नहीं करते। उनके स्वभाव और प्रवृत्तियां उनको पथ-भ्रष्ट करती हैं। किन्तु बहुत थोड़े मनुष्य, सहस्त्रोंमें एक, धुनमें लगे रहते हैं। वे मृत्यु पर्य्यन्त उद्योग करते हैं और वे प्राप्त करते हैं। वे भले ही मर जायं पर सत्यको न छोड़ेंगे। सत्यको प्राप्तिके लिये ऐसे निश्च-यकी आवश्यकता है।

जब तुम पूजा करते हो अथवा प्रार्थना करते हो, कोई विशेष आयोजनकी आवश्यकता नहीं। जानो कि अपने हृदयमें वास्त-विक पदार्थ सत्य भक्तिका होना आवश्यक है? जब तुममें सत्य भक्ति है, तुम किसी मन्त्रका उच्चारण करो या न करो; भगवान इसको सदा ग्रहण करते हैं। हम भगवानको क्या दे सकते हैं?

समस्त संसार उन्हींका है। किन्तु यदि हम केवल अपने हृदयका प्रेम और भक्ति प्रदान कर सकें, तो हम उसकी यथार्थ पूजा करते हैं। अन्यथा, जब हमारे हृदयमें सत्य प्रेम और भक्ति नहीं है, किसी प्रकारका चढ़ावा ईश्वरको प्रसन्न नहीं कर सकता। अपने हृदयसे सरल और साधारण प्रार्थना करो और प्रेम और भक्तिके पुष्प अपने लक्ष्यके चरणोंमें अर्पण करो। मुझे विश्वास है, वाह्य आयोजनकी ओर ध्यान देनेकी अपेक्षा, इस प्रकारसे तुमको अधिक सहायता मिलेगी। सदा पवित्रता और शक्तिके लिये भगवानके निकट प्रार्थना करो, जिससे तुम सत्यता पूर्वक भगवानकी पूजा और सेवा करने योग्य हो सको।

पवित्रता, सच्चाई, निरन्तर उद्योग, निर्भयता हमको भगवानकी पूजा करनेके योग्य बनानेके लिये आवश्यक है।

\+ + + +

ईश्वर अनादि है। कोई धर्म, युक्ति, सिद्धान्त, नाम, रीति अथवा शास्त्रोक्त कर्म उस अनन्त ईश्वरके स्वभावको परिमित नहीं बना सकते। जबतक ईश्वरपर हमारा विश्वास सच्चा और निष्कपट है, हम किसी प्रकार उसकी पूजा करें या न करें। धर्म्म सैद्धान्तिक नहीं है। ईश्वर महान है, किसी विश्वास अथवा सिद्धान्तमें उसकी सीमा नहीं हो सकती। केवल पवित्र हृदयमें वह पूर्ण रूपसे विकसित होता है।

सत्य ईश्वर-दर्शन तब प्राप्त होता है, जब हम उसको समस्त स्थानोंमें देखते हैं, जब हम ईश्वरको सबमें देखते हैं, केवल एक धर्म

या धर्म-पुस्तकमें नहीं। जब हम केवल एक स्थान अथवा एक पदार्थमें ईश्वरको देखते हैं तो वह दृश्य क्षणिक है; किन्तु ईश्वरका सत्यज्ञानी उसको समस्त स्थानोंमें देखता है, इसलिये उसकी जागृति स्थिर है। वास्तवमें वह धन्य है, जो समस्त पदार्थोंमें ईश्वरको देखता है और केवल वही मनुष्य धार्मिक है। जबतक हम दो देखते हैं, हम नहीं जानते, कि उस महान लौकिक शक्तिको किस प्रकार समझें जो समस्त पदार्थोंका आधार है। प्रत्येक पदार्थमें उसीको देखना पूर्णता है।

मैं इस बातकी चिन्ता नहीं करता, कि आध्यात्मिक पुष्प कहां उत्पन्न होता है, पूर्वमें अथवा पश्चिममें, यह कहीं उत्पन्न क्यों न हो, इसमें वही सौन्दर्य और सुगन्ध होगी और जो कोई इसके समीप आता है, उसको यह समान आनन्द देगा। इसलिये आध्यात्मिक मनुष्य समान है चाहे वह पूर्वमेंहो अथवा पश्चिममें, वह जहां भी होगा उसी सत्य, सौन्दर्य और पवित्रताका प्रकाश करेगा।

जब हम किसी व्यक्ति अथवा जातिके हृदय (अभ्यन्तर) में पहुंचते हैं, वहां हम एक पदार्थ ऐसा पाते हैं जो न तो व्यक्तिगत है न जातीय है; किन्तु सर्व सम्बन्धी है। यह वही हृदय है, किन्तु यह भिन्न भिन्न जातियोंमें भिन्न भिन्न रूपसे धड़कता है। सत्य सदा एक है, इसके वाह्य-स्वरूपोंमें भले ही भिन्नता हो।

हमारा कर्त्तव्य है मेल करना, सहानुभूति प्रकट करना, वैर भाव नहीं। कभी कभी मनुष्योंको एक बड़े लक्ष्यको समझनेमें

बहुत समय लगेगा ; किन्तु धैर्य, निरन्तर उद्योग और प्रेम अन्त में सबके ऊपर विजय लाभ करेंगे। मनुष्योंको सुख और आनन्द देना अच्छा है, किन्तु उन्हें विचारके प्रकाश द्वारा सहायता देनेके योग्य होना बहुत बड़ी बात है, क्योंकि सत्यका प्रकाश मनुष्यको जन्म-मरणके—आवागमनके चक्करसे बचाता है और अनन्त आनन्द देता है।

हमारे विचार समस्त भौतिक अवस्थाओंके परे पहुंच सकें। हम सत्यमें आनन्द और उत्तम सुख पावें। सत्य प्राप्तिके लिये प्रत्येक पदार्थ हमको उत्तेजित करे। सत्यके ध्यानमें हम दृढ़ रहें। कोई पदार्थ हमको निरुत्साहित न करे। हमारा समस्त जीवन सत्यकी भक्तिसे पवित्र हो। सत्य हमारे हृदयोंको उज्ज्वल करे। हम सत्यको ही लक्ष्य, शक्ति और सहायता सब कुछ समझें। हमारा जीवन एक मात्र सत्यके आधारपर हो।

आत्माका मार्ग

सुख-दुःख, लाभ-हानिके समस्त विचारोंको त्यागकर, दिन रात ईश्वरकी पूजा करो, एक पल भी वृथा न खोना चाहिये।

अहिंसा, सत्यता, पवित्रता, दया और ईश्वर-भक्ति सदा इनका उपयोग करो।

समस्त विचारोंको त्याग करो, सम्पूर्ण मनसे दिन रात, ईश्वरकी पूजा करो। इस तरह दिन रात पूजनेसे, ईश्वर अपनेको प्रकट करता है और अपने पूजकोंको दर्शन देता है।

नारदभक्ति सूत्र।

जैसे बिना तेलके दीपक नहीं जलता, वैसे बिना ईश्वरके मनुष्य भी जीवित नहीं रह सकता। स्वर्णकी कामना करनेवाले कृपण मनुष्यकी सी चाह यदि ईश्वरके लिये तेरे हृदयमें हो तो, मैं तुझसे सत्य कहता हूं, जो ईश्वरकी अभिलाषा करता है, वह उसे प्राप्त कर लेता है। जा! इसको अपने जीवनमें सिद्धकर; निरन्तर तीन दिन तक सच्चाईसे प्रयत्न कर और तू अवश्य सफलता प्राप्त करेगा।

श्रीरामकृष्ण।

अपने मनमें मेरा (भगवान्) चिन्तन कर, तू मेरा भक्त हो, मेरी पूजा कर और मेरे सन्मुख अवनत मस्तक हो; इस तरह, दृढ़तासे अपने चित्तको केवल मुझमें मिलाकर और मुझमें अपना श्रेष्ठ ध्येय समझ कर, तू मुझको प्राप्त करेगा।

श्रीमद्भगवद्गीता।

आत्माका मार्ग।

प्रार्थना।

भगवन्! विश्वके श्रेष्ठ शासक!

तू ही केवल जानने योग्य है।

तू ही केवल आराध्य देव है।

तू ही केवल प्राप्त करने योग्य है।

हमारे विचार सदा तेरी ही ओर झुके रहें।

हम तेरे प्रतापको देखना और अपनी सम्पूर्ण देहमें तेरे ज्ञानको भरना सीखें।

हमको अपने आध्यात्मिक-जीवनमें शक्ति और दृढ़ता प्रदान कर।

हमको अटल भक्तिसे धर्मके मार्गमें चलना सिखा।

समस्त दुःख और अज्ञानतासे हमारी रक्षा कर।

तेरी शान्ति और आशीर्वाद हममें और हमारे सकल विचार, शब्द, कर्मोंमें वास करे।

उस महान ईश्वरकी प्राप्ति लक्ष्य है और हम सब उसी अभीष्टकी ओर अग्रसर हो रहे हैं। किन्तु जैसे ही हम मार्गका अवलम्बन करते हैं, हम बहुधा प्रलोभनोंमें फसकर पथ-भ्रष्ट हो जाते हैं और पदार्थोंका भोग करनेके लिये ठहर जाते हैं; इस तरह हम समयका नाश करते हैं। जिनमें सत्य भक्ति और विचार है, वे दृढ़ता पूर्वक आगे बढ़ते हैं और लक्ष्य प्राप्त करने तक कभी नहीं ठहरते।

जबतक हम अपने स्वर्गीय धाममें अपनी स्वर्गीय माताके साथ नहीं हैं, तबतक हमारी रक्षा नहीं है। यह संसार विपित्तिराय है। हम समझते हैं कि हम रक्षित हैं, किन्तु कितनी ही बार हम मोहान्ध होकर इन्द्रियोंके वशमें हो जाते हैं। मार्गके सब कंटकोंको दूर करनेके लिये अपने लक्ष्यपर अटल श्रद्धा होनी चाहिये, इससे शक्ति प्राप्त होती है। यदि हम इन्द्रियोंके बहकावेमें आया करें और लक्ष्यकी ओरसे अपने विचार पलट दें तो यह रास्तेमें ठहर जानेके समान है और इससे हम लक्ष्य तक नहीं पहुंच सकते। सच्चा भक्त नहीं ठहरेगा। वह जानता है कि उसको बिना विलम्ब घर पहुंचना चाहिये, अन्यथा तूफान उसको कष्ट देगा अथवा संध्या हो जानेसे मार्ग नहीं दिखलाई देगा।

किसी दशामें भी हमको आध्यात्मिक जीवनका त्याग नहीं करना चाहिये। अन्य प्रकारके जीवनोंसे यह जीवन शान्ति पूर्वक और चुपचाप व्यतीत करना चाहिये। हम अपने लक्ष्यके सम्बन्धमें जो सोचते हैं उसको कोई न जाने; जैसे श्रीरामकृष्ण गाया करते थे।

"ऐ मेरी आत्मा! मेरी माताकी गोदमें बैठ जा।
तेरे और मेरे सिवाय उसे और कोई न देखे।"

इसका यह अर्थ है कि आध्यात्मिक जीवन शान्तिके साथ बिना शोर मचाये और बाह्याडम्बर किये व्यतीत करना चाहिये। सब हृदयमें गुप्त रखना होता है।

\+ + ÷ ÷

आत्माका मार्ग इतना सहज है कि, एक बालक भी इस पर चल सकता है ; किन्तु बड़े मनुष्य, जिनके चित्त उलझे हुए हैं, उनके लिये यह मार्ग तलवारकी धारके समान है। स्वर्गीय माता शुद्ध चित्त वालोंकी सदा रक्षा करती है और वह उनके चारों ओर ऐसी सृष्टि रचती है कि कोई पदार्थ उसको छू नहीं सकता। प्रत्येक मनुष्य इस अवस्थाको प्राप्त कर सकता है। जिस पदार्थके लिये तुम्हारे हृदयमें प्रबल उत्कण्ठा हो, उसे तुम प्राप्त कर सकते हो। शक्ति तुम्हारे अभ्यन्तरमें है। किन्तु तुम इसको प्राप्त नहीं कर सकते यदि तुम अहंकारकी दृष्टिसे कार्य करोगे। यदि तुम स्वर्गीय माताके चरणोंमें आत्मसमर्पण करोगे और पूर्ण भक्तिसे प्रार्थना करोगे, तब तुम्हारी उन्नतिको कोई नहीं रोक सकता। तुम अवश्य सफलता प्राप्त करोगे।

आध्यात्मिक जीवन जीनेकी योग्यता तुममें होनी चाहिये। जीवनका आनन्द ही तबतक नहीं मिल सकता, जबतक जीवन आध्यात्मिक न हो। तुमको जानना चाहिये कि जीवन क्या है। तुमको इसके अर्थ और उद्देश्यका पूर्ण ज्ञान होना चाहिये, क्योंकि जब अवस्था तुम्हारे विपरीत हो तब तुम ईश्वरके सच्चे बालकके समान खड़े होकर विपत्तिका सामना करनेके लिये समर्थ हो सको। तुमको अपने अस्तित्वका पूरा पता लगाना होगा। तुमको ज्ञानके प्रकाशसे जीवनका कोना कोना छानना होगा, जिसमें कोई बात तुमसे छिपी न रह जाय। तुमको उठना चाहिये, जागरित होना चाहिये और समस्त आलस्यको दूर करना चाहिये।

जब तुम ऐसा जीवन आरम्भ करोगे, तब प्रत्येक पदार्थ तुम्हारा सहायक होगा। जबतक तुम आध्यात्मिक दृष्टिसे मृत प्राय हो, जबतक निरन्तर पार्थिव पदार्थोंकी चिन्ता करनेसे तुम्हारा हृदय निर्जीव है, तबतक प्रत्येक पदार्थ तुमको निर्जीव विदित होगा। किन्तु ज्योंही तुममें जीवनका संचार होगा, त्योंही जीवित पदार्थ तुम्हारे सम्मुख उपस्थित होंगे। जब क्षेत्र तैयार होता है, बीज स्वयं आ जाता है; इसी तरह जब तुम्हारा हृदय उचित रीतिसे तैयार किया गया है और जीवित बीजको प्राप्त करनेके लिये तत्पर है, तब जीवन प्रदान करनेवाली शक्तिका अवश्य प्रादुर्भाव होगा। आनन्दका सुन्दर दृश्य दूसरोंसे प्राप्त करनेकी आशा तुमको नहीं करनी चाहिये। ईश्वर तुमको दे सकता है, किन्तु तुम इसको नहीं रख सकोगे। तुमको अभिलाषा, दीनता, बालकोंके समान सहृदयता और विश्वाससे क्षेत्र तैयार करना चाहिये।

तुममें आध्यात्मिक जीवनकी प्रबल उत्कण्ठा उत्पन्न होनी चाहिये। तुमको अपना समस्त अस्तित्व आध्यात्मिक पदार्थोंमें मिला देना चाहिये। तुमको आत्माकी तृष्णा अनुभव करनी चाहिये और इसको तृप्त करनेका प्रयत्न करना चाहिये। जो तुम्हारे हृदय और विचारको उन्नत करता है, तुमको उसे अपने जीवनका एक अङ्ग बनानेका प्रयत्न करना चाहिये। तब तुमको पवित्रताका अभ्यास करना चाहिये, निरन्तर उद्योगका अभ्यास करना चाहिये और तुमको ध्यानका अभ्यास करना चाहिये। यदि

तुम दृढ़तासे इनका अभ्यास करोगे, ये तुम्हारे स्वभावमें सम्मिलित हो जायेंगे। जिनका आध्यात्मिक अभ्यासका स्वभाव है, वे इसके बिना नहीं रह सकते। यह यदि उनके पास नहीं होगा वे क्षुधासे पीड़ित होंगे।

जैसे अत्यभिलाषी और बेचैन इस समय हम शारीरिक क्षेत्रमें हो रहे हैं, वैसी ही अत्यभिलाषा और बेचैनी हमको आध्यात्मिक क्षेत्रमें भी होनी चाहिये। हम क्षणिक पदार्थोंके लिये इतना परिश्रम करते हैं, जो अनन्त है उसके लिये भी थोड़ा प्रयास हम क्यों न करें? हम इस देहके लिये इतना कर रहे हैं, हमको अपनी आत्माके लिये भी उतना हो परिश्रम क्यों नहीं करना चाहिये?

जो सदा ईश्वरकी हो.. आराधना करता है, वह ईश्वरमें ही वास करता है। जो सदा इस मांसपिण्डका हो चिन्तन करता है, उसका क्या होता है? वह पदार्थोंमें ही अधिकाधिक लिप्त रहेगा। जो उत्पन्न हुए हैं, वे अवश्य मरेंगे। मृत्यु अनिवार्य है। किन्तु कुछ ऐसे हैं जो इस शरीरके लिये मरते हैं; हमको उनके पद-चिन्होंका अनुसरण न करना चाहिये। कुछ ऐसे हैं जो ईश्वरके लिये प्राण त्याग करते हैं, हमको उनका अनुकरण करना चाहिये। केवल साक्षात ईश्वर-दर्शनसे ही आत्मा तृप्त होती है। आत्माको क्षुधा और तृष्णा और कोई तृप्त नहीं कर सकता। केवल जब यह ईश्वरके सन्मुख खड़ी होती है, तब यह समस्त अपूर्णताओंसे स्वातंत्र्य लाभ करती है और प्रथम बार

सत्य सुखका रसास्वादन करती है।

हमको इस देहकी रक्षा करनी चाहिये, क्योंकि यह ईश्वरका पवित्र स्थान, मन्दिर है। इसोलिये इसकी रक्षा करनी चाहिये, शरीरके भावसे नहीं और इस मन्दिरमें एक दीपक सदा जलना चाहिये। जब ध्यान द्वारा हम आध्यात्मिक स्वभावको सुलगाते हैं, तब प्रकाश उत्पन्न होता है।

+ + + +

आध्यात्मिक जीवनके लिये बड़े एकाग्र ध्यानकी आवश्यकता है, क्योंकि एकाग्र ध्यानसे ही उपयुक्त परिस्थितिकी सृष्टि होती है। यदि तुम्हारे विचार घृणित और दुष्ट हैं, तुम खराब परिस्थिति उत्पन्न करते हो ; इसी तरह जब तुम्हारा मन पवित्र वस्तुओंपर स्थिर है, तब तुम अच्छी परिस्थिति उत्पन्न करते हो। चाहे तुम स्वयं यह न जानते होंगे, पर ऐसा होता हैं और दूसरे उसका अनुभव भो करते हैं। जब तुम किसी कार्यमें अपने हृदय और आत्माकी सारी शक्ति लगा देते हो तब वह कार्य अवश्य पूर्ण हो जाता है। इसका यह मतलब है कि तुम अपने लिये ऐसी अवस्था उत्पन्न करते हो और तुम्हारी अन्तर्बाह्य प्रकृति मूल प्रकृतिके साथ ऐसी तन्मय हो जाती है कि तुम्हारा काम सिद्ध हो जाता है, वह विफल हो ही नहीं सकता।

किन्तु यह तभी सम्भव है जब मन पूर्ण रूपसे तुम्हारे अधिकारमें हो। बहुत थोड़े मनुष्योंका मन पूर्ण होता है। उनके पास केवल छोटे २ टुकड़े होते हैं। उनका मन अपने अधिकारमें नहीं

है। उसपर अनेक पदार्थोंका आधिपत्य है। उनका इसके ऊपर कुछ अधिकार नहीं। जो पूर्ण रूपसे उच्च लक्ष्यके प्रति पूर्ण रूपसे आत्म-समर्पण करनेके लिये समर्थ हैं, उनका अपने मनके ऊपर पूर्ण अधिकार है। मन शक्ति है, जब यह निरन्तर असाधारण संसारके विषयमें सोचता है और अपनेको छोटे २ टुकड़ोंमें विभक्त करता है, यह कदापि बलवान नहीं हो सकता। किन्तु जब तुम इसको वशमें करनेमें समर्थ हो, तब यह तुम्हारा है, तुम्हारे अधिकारमें हैं और मुक्ति प्राप्त करनेके लिये तुम इसका उपयोग कर सकते हो। महात्मा लोगोंका अपने मनके ऊपर पूर्ण स्वामित्व है, इसलिये वे पूर्ण रूपसे भगवान्‌में आत्म-समर्पण कर सकते हैं। जो कुछ उन्होंने किया है, तुम भी कर सकते हो।

भगवद्-गीतामें कहा है "पूर्ण निश्चयात्मक मन एक और एकाग्र है।" सत्यको खोज करनेवालेका भी मन ऐसा ही है। वह किसी अन्य पदार्थका विचार नहीं करता। वह उसीमें हिलता है, वह उसीमें रहता है, उसके समस्त अस्तित्वका आधार वही है, और वह वही बन जाता है। तुम पूछ सकते हो, उसके साधारण जीवनका क्या हो जाता है? क्या एक बुद्धिमान मनुष्य खाता है, सोता है, कार्य करता है? हां; वह खाता है, सोता है और अपने समस्त कार्य करता है, किन्तु वह जानता है कि उसकी आत्मा अमर है और वह इस ज्ञानसे विचरता है। एक साधारण मनुष्य रोग, दासत्व, दुःखको पहिचानता है, किन्तु जिसके पास आत्म-ज्ञान है वह इनको नहीं जानता; वह ईश्वरको

जानता है। वह अन्य मनुष्योंकी तरह जीवन व्यतीत करता है; किन्तु वह स्वतन्त्र है, जब कि अन्य मनुष्य पराधीन हैं। तुम उसको एक अन्धेरे बन्दीगृहमें डाल दो, वह वहां अपने अभ्यन्तरमें उज्ज्वल प्रकाश अनुभव करता है। तुम उसके प्रकाशको छीन नहीं सकते। तुम्हारी सहायताकी उसको आवश्यकता नहीं, वह सकल प्रकारकी सहायता ईश्वरसे प्राप्त करता है। तुम उसके ऊपर अनेक अपराध लगाओ, वह उनसे विचलित नहीं होता।

कौन अधिक बलवान है? वह जो विचलित नहीं होता। वह ऐसे वायुमण्डलमें रहता है, जिसको कोई नहीं तोड़ सकता। उसका वास ऐसे पृथक द्वीपमें है, उसके समीप कोई नहीं जा सकता। वह ऐसी स्थितिमें रहता है जो कभी अस्थिर नहीं हो सकती। उसका आन्तरिक ज्ञान शान्ति है और वह आभ्यन्तरिक आनन्द जो उसके पास है, स्वयं उसीका है। तुम्हारे पास एक सुन्दर कमरा है, इसको फूलोंसे सजाओ और शान्ति प्राप्त करनेके लिये सब कार्य करो; तुम्हारे अभ्यन्तरमें शान्ति और आनन्दकी अपेक्षा यह उत्तम नहीं है। तुमको यह विशेष स्थान छोड़ना होगा; किन्तु अभ्यन्तरके मन्दिरको जहां तुम जाओ, ले जा सकते हो। वह पवित्र स्थान जो तुम अपने अभ्यन्तरमें अपने विचार, शब्द और कर्मोंसे बनाते हो, कोई उसको छीन नहीं सकता।

\+ ÷ ÷ +

इस संसारमें जीवित मन्दिर भी हैं, जीवित देवता भी है। किन्तु वे एक स्थानमें स्थापित नहीं हैं। नहीं; वे विशाल देशमें व्यापक हैं। उन्होंने पवित्रता और शान्तिका ऐसा वायुमण्डल बना लिया है कि उनका प्रत्येक शब्द, उनका प्रत्येक विचार, उनका अस्तित्व शान्ति और आनन्द उत्पन्न करता है। वे जहां जाते हैं ईश्वरके वायुमण्डलको साथ ले जाते हैं और मनुष्य उनके दर्शनसे ही आशीर्वाद प्राप्त करते हैं। यह कोई असाधारण विशेषता नहीं है। जो उन्होंने की है, तुम कर सकते हो और प्रत्येक मनुष्य कर सकता है। बुद्धिमान पुरुष जो जानते हैं, जिन्होंने ये पदार्थ स्वयं प्राप्त किये हैं, वे कहते हैं कि यह सम्भव है। कोई भी प्राणी आध्यात्मिक दृष्टिसे दोष-युक्त नहीं है, अपनी आध्यात्मिक शक्तिमें कोई भी इतना दरिद्र नहीं है, कि वह इसको न कर सके।

एक सच्चा गुरु स्रोतके समान है जो निरन्तर बहता रहता है, और मनुष्य छोटे बड़े गिलास, बर्तन लेकर आते हैं, किन्तु वे उसे सुखा नहीं सकते, क्योंकि ईश्वरकी शक्ति अक्षय है। भाषण और उपदेश देना उसके कार्यका बहुत ही क्षुद्र भाग है। प्रधान कार्य बीज-वपन है। जिनकी मनोभूमि तैयार है, वे उपदेशके बिना भी केवल दर्शनसे ही उसके जीवतत्वका अनुभव करते हैं। शब्द बहुत कम प्रकाश करते हैं, किन्तु हृदयके भीतरी हिस्सेमें इसका भाव अनुभव होता है।

विशुद्ध और पवित्र आत्माओंका सत्संग आध्यात्मिक जीवनमें

बड़ा सहायक होता है। यदि तुम मार्गमें थकावट अनुभव करते हो तो केवल वे ही तुमको सत्य विश्राम और उत्साह प्रदान कर सकते हैं। सच्चे महात्मा, निःस्वार्थ, पवित्र चरित्र वाले वसन्त ऋतुके समान होते हैं। जैसे वसन्तके आगमनसे सब पदार्थोंमें नव-जीवनका संचार होता है, इसी प्रकार ये गुरु भी, जहां जाते हैं, पवित्रता और विशुद्धताका वायु-मण्डल साथ साथ ले जाते हैं और नया जीवन और शक्ति उत्पन्न करते हैं। स्वयं भवसागर पार करके, वे इसको पार करनेके लिये दूसरोंको सहायता प्रदान करते हैं, कुछ बदला लेनेके विचारसे नहीं, किन्तु इसलिये कि वे भला करना अच्छा समझते हैं। पवित्र आत्मा, जो इस संसारमें दूसरोंके उपकारके लिये रहते हैं, सब स्थानोंमें प्रसन्नता, प्रकाश और आशीर्वाद देते हैं।

जो अपना जीवन पवित्र रखते हैं, जो पवित्र विचारमें रहते हैं, वे सदा प्रसन्न रहते हैं। आध्यात्मिक उन्नतिका चिह्न प्रसन्नता है। जो मनुष्य सच्चा आध्यात्मिक है, वह सदा आनन्दसे परिपूर्ण है। जब हम ऐसा अनुभव करते हैं, हमको जानना चाहिये, कि हम उन्नति कर रहे हैं। जो उसके प्रकाशको आभ्यन्तरमें प्राप्त करता है, वह सदा आनन्दमय है।

ईश्वरके बालक उठ! उठ! जाग! क्यों इतनी देरतक सोता है? अब अधिक न सो। जो उस अनन्तको प्राप्त करता है, केवल वही सुखी है। महात्मा लोग तुमसे कहते हैं, कि तुममें अनन्त शक्ति विद्यमान है और तुम सब विपत्तियोंका अवश्य निवारण

करोगे ; तुम उसको अवश्य प्राप्त करोगे। इसलिये अपने सम्पूर्ण हृदयसे ईश्वरकी खोज करो। कभी निरुत्साह मत होओ। मार्गको कभी मत छोड़ो। आध्यात्मिक जीवनकी वास्तविकताको अनुभव करो। भगवानकी पुकार ऐसे सच्चे हृदयसे करो कि वह सुने और तुम्हारे अन्दर ऐसा दृश्य उत्पन्न करे, कि तुम महान कष्टमें भी उसको कदापि न भूल सको।

प्रयत्न करो और कभी मत छोड़ो, आध्यात्मिक जीवनमें सफलता प्राप्त करनेका यही रहस्य है।

यज्ञ जीवन ।

जो किसी प्राणीसे घृणा नहीं करता और सबसे मैत्री भाव और दया रखता है, जो माया और अहङ्कारसे स्वतन्त्र है, सुख दुःखमें समान और क्षमाशील है, जो सदा प्रसन्न और ध्यान-मग्न है, जो आत्म-विजयी और दृढ़-प्रतिज्ञ है, मन और बुद्धिको जो मुझे समर्पित कर चुका है और जो इस प्रकार मेरी भक्ति करता है, वह मुझे प्रिय है।

—श्रीमद्भगवद्गीता।

दैवी वाणी गरजकर बारंबार कहती है,—द, द, द, (दमयत्, दत्त, दयाधाम); अर्थात् इन्द्रियोंका दमन करो, दान करो, दया करो।

—बृहदारण्यक-उपनिषत्।

वास्तवमें उसको मैं ब्राह्मण (आत्मोत्सर्ग किया हुआ) कहता हूँ, जिसका ज्ञान गम्भीर है, जो विवेकी है ; जो सत्यासत्यको जानता है, जिसने संसारको, जिसका पार करना कठिन है, इस कीचड़से भरे हुए मार्गको पारकर लिया है ; जो विचारशील है, दृढ़ है, शङ्का रहित है, माया और सुखसे स्वतन्त्र है।

—धम्मपद।

यदि मनुष्यके विचार ब्रह्ममें इस प्रकार स्थिर रहते जैसे वे इस संसारके पदार्थोंमें हैं, तब कौन दासत्वसे मुक्त न हो ?

—मैत्रायणी-ब्राह्मणी-उपनिषत्।

यज्ञ जीवन।

प्रार्थना।

भगवन, मैं धन नहीं चाहता।

मैं शक्ति नहीं चाहता।

मैं इस नश्वर संसारके क्षण-भंगुर सुखको नहीं चाहता। वरदान दे कि यह शरीर, मन और हृदय पूर्ण रूपसे तेरी प्रेरणापर उत्सर्ग हो।

मेरे समस्त विचार, मेरी समस्त इच्छाएं, मेरा प्रत्येक अंग तेरी सेवामें उत्सर्ग हो।

मैं आनन्द और श्रेष्ठ सुख तुझमें अनुभव करूँ।

मैं तेरी भक्तिमें दृढ़ रहूं;

मेरे विचार और प्रार्थना ऐसे निःस्वार्थ हों कि वे तेरे समीप पहुंच सकें;

प्रत्येक मनुष्यके लिये मेरे हृदयमें इतना प्रेम भरा हो कि इसमें कोई दुष्ट विचार न समा सके।

मुझे यह वरदान दे, हे भगवन्, तू जो सबका दाता है। प्रत्येक स्वार्थी विचार और कर्मसे मेरी रक्षा कर।

समस्त जीवित प्राणियोंको अपनी शान्ति प्रदान कर!

जब हम जानते हैं कि, हमने इस जीवनमें इतनी अभिलाषा की और इतना कम प्राप्त किया है, तब त्यागका भाव उत्पन्न होता है। हमारे समस्त दुःखोंका कारण कामनाएं हैं। जबतक हममें

किञ्चित स्वार्थकी इच्छा रहेगी, तबतक हमें इस विचित्र संसारमें रहना ही पड़ेगा; किन्तु बुद्धिमान मनुष्य जानता है कि यह संसार नाशमान है और इसको त्याग देता है। जबतक मनुष्य भूखा होगा, वह भोजन मांगेगा। केवल जब उसकी क्षुधा तृप्त हो जायगी तब वह इसको अस्वीकार करेगा। इसी तरह जबतक मनुष्य संसारके लिये भूखा है, जबतक उसमें इच्छा शेष है, वह संसारके पदार्थोंसे लिपटा रहता है; किन्तु जब उसकी क्षुधा निवृत्त हो जाती है, तब वह उसको सहर्ष त्यागनेके लिये तैयार हो जाता है और त्यागका जीवन उसके लिये प्रारम्भ होता है।

सांसारिक मनुष्य सोचते हैं कि धार्मिक मनुष्य मूर्ख हैं, पर वे बड़े होंगे और उनका यह विचार बदल जायगा। यदि कोई बालक पूछे कि चीनीका स्वाद कैसा होता है तो तुम बतला न सकोगे। चीनी उसे स्वयं चखनी होगी, तब स्वाद मालूम होगा। इसी तरह इच्छा-रहित दशाका वर्णन नहीं किया जा सकता और इसको जाननेके लिये तुमको इसे स्वयं चखना होगा। सत्यके ज्ञाता तुमसे कह सकते हैं, कि उस दशामें क्या देखा और अनुभव किया जा सकता है; परन्तु जब तुम स्वयं इसका अनुभव प्राप्त नहीं करते, क्या तुम जान सकते हो कि वास्तवमें यह क्या है? प्रत्येक मनुष्यको स्वयं अनुभव करना चाहिये। हम दूसरोंके अनुभवसे नहीं सीख सकते।

यह सत्य है, कि जब हम पूर्ण भक्ति और त्यागका आदर्श जीवन व्यतीत करनेका प्रयत्न करते हैं, तब हमको संसारका अप-

राधी ठहराना, निन्दा करना इत्यादि परीक्षाओंको उत्तीर्ण करना होगा, किन्तु यह भी सत्य है, कि मनुष्य जो सुख आध्यात्मिक जीवनमें अनुभव करता है, बाहरी दुःखोंसे घिरे रहनेपर भी संसारके समस्त सुखोंसे वह अत्युत्तम है। इसलिये हमको विचार पूर्वक ऊपर लक्ष्यपर अटल रहना चाहिये, फिर चाहे कुछ भी हो जाय।

दूसरोंके कहनेका हमारे ऊपर कुछ प्रभाव न पड़ना चाहिये। एक अन्धा मनुष्य दूसरे अन्धेके लिये पथ-प्रदर्शक नहीं हो सकता। इसलिये संसारके कहनेपर चलना नहीं, किन्तु उन प्रकाशमान आत्माओंका अनुकरण करना, जिन्होंने प्रकाश प्राप्त कर लिया है, हमारे लिये सर्वोत्तम मार्ग है। ये दोनों सदा परस्पर विरोधी हैं। जैसे भगवद्गीतामें कहा है,—"जो समस्त प्राणियोंके लिये रात्रि है, उस समय आत्म-विजयी जागरित रहता है; और जिस समय समस्त प्राणी जागरित रहते हैं, वह आत्म-ज्ञानीके लिये रात है।"

हमको चुपचाप अपना चरित्र गठन करना चाहिये। हमको अपने गुण और गौरवको प्रसिद्ध नहीं करना चाहिये। अपनेको प्रकट करनेकी कोई आवश्यकता नहीं। यदि हम एक कन्दरामें पड़े रहें और एक सुन्दर विचारका चिन्तन करें तो वह औरोंके हृदयमें प्रवेश करेगा और उन्हें सुखी करेगा। सच्चे साधुकी परीक्षा उसके शब्दोंसे नहीं, किन्तु उसके कर्मोंसे होती है। जब हम सत्यता पूर्वक त्यागका जीवन आरम्भ करते हैं, तब हममें

परिवर्त्तन हो जाता है, यहाँ तक कि हमारे शरीरके प्रत्येक भागमें परिवर्त्तन हो जाता है, और वही मन और देह, जिसने बहुधा दुष्ट कर्म किये हैं, अब वह केवल भलाई ही करता है। और तब हम भगवानके हाथमें योग्य यन्त्र बन जाते हैं और हमारा प्रत्येक प्रयत्न मानव-समाजका कल्याण करता है। परन्तु इस दशाको प्राप्त करनेके लिये, हममें सच्चाई, नम्रता और भक्ति होनी चाहिये।

आध्यात्मिक जीवनमें सबसे प्रथम नम्रताकी आवश्यकता है। जब तक हम सोचते हैं कि हम कुछ जानते हैं, तबतक हमें अध्ययनका अधिकार नहीं हैं; किन्तु जब हम यह जानते हैं कि हम कुछ नहीं जानते और जो निःस्वार्थ और पवित्र है उसके चरणोंमें गिरते हैं, तब हम सीखना आरम्भ करते हैं।

\+ × × +

निःस्वार्थता ही सदा हमारा लक्ष्य होनी चाहिये, चाहे हम सफलता पूर्वक इसका अनुकरण कर सकें या नहीं। इसके लिये हमारे हृदयमें ज्वलन्त प्रेम होना चाहिये, क्योंकि निःस्वार्थता सबसे अधिक पवित्रता देनेवाली है। जबतक देहमें प्राण है, हमको उद्योग करना चाहिये। बस यही हम कर सकते हैं; अपने कर्मोंके फलाफलका हमको क्या अधिकार है?

जबतक हम पूर्ण रूपसे निःस्वार्थ नहीं होते तबतक ईश्वरकी अथवा उसके बालकोंकी सेवा करना असम्भव है। आरम्भमें यह कितना ही असम्भव प्रतीत होता हो, हमको निरुत्साह होकर लक्ष्य न त्यागना चाहिये। सदा निम्न स्वभावसे लड़कर ही

केवल निःस्वार्थ दशा प्राप्त हो सकती है; और यदि हम सहस्र बार भी असफल हों, इससे हमें हतोत्साह न होना चाहिये, किन्तु अच्छे योद्धाओंके समान ताजा दमके साथ खड़े होकर प्रयत्न करना चाहिये। विचार और निरन्तर उद्योग अहंकारकी परिमित अवस्थाओंके ऊपर चढ़नेमें और पूर्ण विजय प्राप्त करनेमें हमारे सहायक हैं।

यह बड़े दुःखका विषय है, कि जब मनुष्य विचारहीनता अथवा निर्बलताके कारण उत्तम पदार्थोंको प्राप्त करनेके अवसरको चूक जाते हैं। किन्तु प्रत्येक कार्य भगवतीकी प्रेरणा और दया पर निर्भर है। दासत्व और स्वतंत्रता दोनों मा भगवतीके हाथमें हैं। जो सच्चाई और नम्रतासे प्रार्थना करते हैं, ईश्वरका राज्य उन्हींका है। अहंकारका वहां प्रवेश निषेध है। यह हमको उस आनन्दमय स्थानमें जानेसे रोकता है। जबतक यह राक्षस अहंकारके रूपमें हमारा शासन करता है, तबतक आध्यात्मिक पदार्थोंके लिये हमारे सब प्रयत्न निष्फल सिद्ध होते हैं। मैं दिन प्रतिदिन इसको अधिकाधिक समझ रहा हूं कि क्यों समस्त महात्माओंने इस बात पर अधिक जोर दिया है। "अहंकारके अतिरिक्त मनुष्यका और कोई शत्रु नहीं है।" यह सत्य है। जब इस महान शत्रुपर विजय प्राप्त होती है, तभी मनुष्य जान सकता है कि आत्म-प्रभा क्या है।

हमारी गतिके सब प्रतिबन्ध और जीवनके सब दुःख, हमारे समस्त संकुचित भाव और अपूर्णता इसी अहंकारसे पैदा

होती हैं। अहंभावका जब अभाव होता है तभी हृदयमें पवित्रता नम्रता, प्रेम, शान्ति और सारी दैवी संपत्ति ओतप्रोत भर जाती है। भगवानकी दयासे हमें आनन्दका वह अमृत पान करनेको मिले जो इस अहंकार-रहित दशामें प्राप्त होता है। हम अपने समस्त कार्योंमें यह जान सकें, कि यह भगवानका कार्य है। हम उसकी इच्छा पूर्ण कर रहे हैं, अपनी नहीं; जो हम कर रहे हैं, वह सब ईश्वर हमारे द्वारा कर रहा है। हमारी बुद्धि कभी भ्रममें न पड़े, किन्तु यह हमको यह देखनेमें सहायता दे कि केवल ईश्वर ही कर्ता है और सब उसीके प्रेरणासे होता है।

\- - - -

हममें बल होना चाहिये, हममें कार्य करनेकी शक्ति होनी चाहिये; किन्तु हमें पहले यह निर्णय कर लेना चाहिये कि जो क्षणिक है उसके लिये हमें कार्य करना है अथवा जो अनन्त है उसके लिये। जहां हमारा भण्डार होगा, वहीं हमारा हृदय भी होगा। हमको सच्चाईके साथ ईश्वरसे प्रार्थना करनी चाहिये, कि वह हमें ज्ञान और शक्ति दे, जिससे हम उस मार्गका अवलम्बन योग्यता पूर्वक कर सकें जो हमारे लिये और हमारे आश्रितोंकी भलाईके लिये अत्युत्तम है। जब हमारा हृदय दृढ़तासे ईश्वरके चिन्तनमें लग जाता है तब यह संसार भयावह नहीं हो सकता। जब सच्चे विश्वास और निश्चयके साथ हम उसका ध्यान करते हैं तब कोई विपत्ति हमारे पास फटक नहीं सकती। पर ईश्वरके प्रेम और दयाके बिना जीवन सदा अरक्षित और दुःखोंसे परिपूर्ण

है। प्रकाशके लिये उससे सत्यता पूर्वक प्रार्थना करो और स्वार्थ रहित भावोंसे अपने कर्त्तव्योंका पालन करो। अपनी देह, मन और हृदयको एक करनेका प्रयत्न करो। अपने समस्त विचार, शब्द और कर्मों में पवित्रता और आत्म-संयमका अभ्यास करो। इससे तुम्हें शान्ति मिलेगी।

प्रत्येक अच्छा कार्य मनुष्यको दूसरा अच्छा कार्य करनेके लिये उत्साहित करता है। इस संसारमें पदार्थों का निरन्तर परिवर्तन होता रहता है, किन्तु स्मृति रहती हैं। और निःस्वार्थ और उत्तम कार्यकी स्मृति आत्माको महान् शक्ति और सुख देती है। सत्यका भक्त वास्तवमें कष्ट भोग करता है जब वह किसीके दुःखको अपने ऊपर लेकर उसका दुःख दूर करता है। वह केवल दूसरोंको कष्ट देनेसे डरता है; किन्तु वह कष्टको अपने ऊपर लेनेमें हर्षित होता है, यदि ऐसा करनेमें वह दूसरेको शान्ति और आनन्द दे सके। सच्चे भक्तका यही भाव है और कार्य करनेका यही मार्ग है।

* * * *

हृदयसे ऐसी प्रार्थना कीजिये कि हमारी संग सोहबत और स्थिति हमें शक्ति प्रदान करे, हममें प्रेरणा करे। तुम्हारे कार्य और महान विपत्तियोंसे घिरनेपर हमारी शान्ति भङ्ग न हो। सबके लिये विपत्ति और दुःखोंका आना अनिवार्य है, पर जो उनका सामना वीरतासे और शान्तिके साथ करते हैं, वे उन विपत्तियों और दुःखोंसे अधिक बलवान हो जाते हैं और जो

निरुत्साह हो उनके अधीन हो जाते हैं, वे सदा दुःखी रहते हैं।

विघ्न बाधाओंका सामना किये बिना कोई कार्य कभी सम्पूर्ण नहीं हुआ और वास्तवमें विघ्न क्या है, सौभाग्यका चिन्ह है। यदि मनुष्यमें कोई सत्तत्व है तो वह ऐसे ही समय प्रकट होता है, प्रकट करना ही पड़ता है; क्योंकि उच्चात्मा क्या सुखमें और क्या दुःखमें उच्चात्मा ही है। जबतक हम अपने भावों और विचारोंको पूर्णरूपसे नहीं त्याग देते, तबतक असुविधाओंका सम्मुख उपस्थित होना अनिवार्य है। इसका उपाय क्या है? उपाय हमारे अन्दर है; वह और कुछ नहीं, जीवनकी पवित्रता और सच्ची दृढ़ता है। निर्भय होनेका यही मार्ग है—निःस्वार्थ होनेका अभ्यास डालना। निःस्वार्थताके बिना पवित्रता नहीं आ सकती। यह जान कर, कि सारी शक्ति सच्ची सेवासे ही उत्पन्न होती है, हमें सच्ची सेवा करनी चाहिये। हमको उसके स्वर्गीय चरणोंमें निरन्तर प्रार्थना करनी चाहिये कि हम उन सबके लिये जो हमारे निकट आते हैं, अपनेको आदर्श चरित्र और आशीर्वाद स्वरूप सिद्ध करें।

भगवानमें विश्वास

जो एक बार भी मेरी शरणमें आनेकी चेष्टा करता है, इस विचारसे कि "मैं तेरा हूं," मैं उसकी सकल हिंसात्मक प्राणियोंसे रक्षा करता हूं। यह मेरी प्रतिज्ञा है।

—रामायण।

बुद्धिमान पुरुष, मुझमें, अटल शरणमें आकर उस भयानक भवसागरको तर जाते हैं जो अनन्त दुःखका स्थान है।

—महाभारत।

तुझे नमस्कार है जो मुझ ऐसे दीन शरणागतोंको अज्ञानकी श्रृंखलाके बन्धनसे मुक्त करता है। तू ही मुक्तिका उद्‌गमस्थान ? और अक्षय दयाका स्रोत है। तेरा कार्य कभी बन्द नहीं पड़ता। तू ही है जो समस्त प्राणियोंके हृदयमें बैठकर, उनके विचारों और कार्योंको उनके कर्मोंके अनुसार चला रहा है। तेरी, हे परमात्मन्, मैं बन्दना करता हूं!

—श्रीमद्‌भागवत।

मुक्ति चाहनेके लिये, मैं उस ईश्वरकी शरणमें जाता हूं जो समस्त आत्माओंके ज्ञानका पथ प्रदर्शक प्रकाश है।

—श्वेताश्वतर—उपनिषत्।

हे भारत, अपने सम्पूर्ण हृदयसे भगवानकी शरण ले ; उसकी दयासे तू सर्व श्रेष्ठ शान्ति और अनन्त ज्ञान प्राप्त करेगा।

—भगवद्‌गीता।

भगवानमें विश्वास.

प्रार्थना ।

हमारे हृदयमें उस पवित्र ईश्वरका अचल ध्यान हो, जो समस्त गुणोंका दाता है, जिसका विचार मात्र ही सकल दुष्ट कर्मोंका नाश करता है ।

जिसके दर्शनसे आत्मा प्रकाश और सुख लाभ करता है ;

जिसका नामोच्चारण सकल दुःखोंको दूर करता है और आत्माको सत्य, शान्ति और विश्राम देता है ।

विश्वके उस एक मात्र सत्य पदार्थ, उस अद्वितीयमें हम पूर्ण रूपसे ध्यानमग्न हों ।

वह हमारी पूजाका पात्र हो ।

वह हमारी भक्तिका पात्र हो ।

हम उसके शरणागत हों ।

हमारा विश्वास उसमें सदा अचल रहे ।

ईश्वरके कार्यको कोई मनुष्य नहीं रोक सकता । हर समय तुमको इसका ध्यान रखना चाहिये । बहुधा कार्य तुमको चट्टानोंके बीचसे मार्ग बनानेके समान कठिन भले ही प्रतीत हों ; किन्तु स्मरण रखो, कि उसकी इच्छा और दयासे सब सम्भव है । बलवान बनो और अपने स्थानपर विश्वास पूर्वक डटे रहो । भगवान तुमको आशीर्वाद और शक्ति देंगे । ईश्वरमें विश्वास रक्खो और सब भला होगा । प्रत्येक कार्यको स्वामित्वके भावसे

और शान्ति पूर्वक करनेका प्रयत्न करो और पदार्थोंके वेगमें मत बह जाओ। प्रयत्न करो और भगवान् तुम्हारी सहायता करेंगे।

धैर्य धारण करो, धैर्य और निरन्तर उद्योगसे प्रत्येक पदार्थ जीता जा सकता है। भगवान् सदा तुम्हारी रक्षा कर रहे हैं। परमात्मा तुमको योग्य और बलवान बनावेगा। सदा अपना विश्वास और हृदय ईश्वरपर अटल रखो, वही एकमात्र रक्षक है। उसकी दयासे सब सम्भव है और उसकी दया बिना हमारे सब प्रयत्न निष्प्रयोजन हैं।

ईश्वरमें हमको विश्वास करना चाहिये और किसीमें नहीं। हमारा उसके ऊपर विश्वास और प्रेम हमको अचल बना देगा। अधीर होना अथवा अन्य प्रयत्न करना सत्य भक्तके विशेष लक्षण नहीं हैं। वह हमारा पथ-प्रदर्शक है और हम सब सहायता उसीसे प्राप्त करते हैं। हर प्रकारके दुःखके समय हमको शान्ति और विचारके लिये उसकी ओर निहारना चाहिये। केवल सत्य भक्त ही निर्भय और आनन्दमय होते हैं। कोई निर्भय नहीं हो सकता जिसका चित्त सशंकित है। जब हमें उसके दर्शन होते हैं, तब सब काम बन जाता है। अन्धकार और दुःखके बादलोंको दूर करनेवाला, वह सूर्य है। सांसारिक विचारोंसे पथभ्रष्ट होकर, जबतक हम उसको नहीं भूलते तबतक इस संसारमें हमें डरानेवाला कौन है?

सब बड़े गुरुओंने हमें बालकोंकोसी सहृदयता और सरलता धारण करनेका उपदेश दिया है, क्योंकि इसमें न मिथ्याभिमान है,

न अहंकार है, किन्तु भगवान्पर सारा दारमदार है। हृदय, आत्मा और देहको ईश्वरके कार्य और प्रेरणापर समर्पण करना, यही आनन्दका मार्ग है।

सब उसके इच्छानुसार चलते हैं। इस लिये क्या हमको उसे सर्व श्रेष्ठ न समझना चाहिये? क्या हमें उसीकी भावना और प्रार्थना न करनी चाहिये? वह सर्वव्यापी है, सर्व शक्तिमान है, वह सकल गुणोंका दाता है। हमें केवल उसीको जानना चाहिये और अपनी रक्षा और पथ-प्रदर्शनके लिये उसीसे प्रार्थना करनी चाहिये। हम उसकी दयासे अपना स्वर्गीय स्वभाव प्राप्त करें; हम उसकी जागृति अनुभव करें, जिसके बिना किसीका अस्तित्व नहीं है, जो हमारे जीवनका स्रोत है, हमारे अस्तित्व का सत्य स्रोत है; हमको शक्ति, पथ-प्रदर्शन और सकल प्रकारकी प्रेरणाके लिये उसकी ओर निहारना चाहिये।

उसके अनुग्रहसे हम सदा और निरन्तर उसके ध्यानमें निमग्न रहें। हम सदा उसका ध्यान करनेमें सफल हों। जहां हम जायें ईश्वरको साथ लेकर; तब हम अपने सकल कर्त्तव्योंको इसी जीवनमें पूर्ण कर सकेंगे। हम अपनी सकल प्रार्थना उसीसे करें, क्योंकि वह अपने प्रिय बालकोंकी प्रार्थना सुननेमें कभी नहीं चूकता। केवल उसके निकट छोटे बालकोंके समान प्रार्थना करनेके अतिरिक्त, हमको कुछ करनेका अधिकार और शक्ति नहीं है। शेष पूर्ण रूपसे उसके अधिकारमें है।

\+ ÷ × +

केवल परमात्माके अतिरिक्त और किसीको अपने ऊपर शासन न करने दो। अपने मनसे सदा उसका चिन्तन करो और तुम्हारे बाह्य जीवनमें जो परिवर्तन हों, उनकी कुछ चिन्ता मत करो। हमको मनुष्यके ऊपर कभी नहीं, किन्तु ईश्वरके ऊपर विश्वास रखना चाहिये। दीन मनुष्य क्या कर सकते हैं? उनकी शक्ति बहुत ही परिमित है; वे अपने स्वभावके दास हैं। भगवानकी सेवा करो और उसका कार्य करो। वह आगेकी स्वयं चिन्ता करेगा। केवल सत्य प्रकाशमान होता है, असत्य नहीं। थोड़े कालतक असत्यकी जय भले ही हो, किन्तु इसकी विजय अनन्त नहीं हो सकती।

सब दशाओंमें वीर बने रहो। यदि कोई असुविधा तुम्हारे मार्गमें उपस्थित होती है, स्वर्गीय मातामें प्रगाढ़ प्रेम रखकर, इसका सामना करो। सकल कार्योंमें शान्ति धारण करो और बुद्धि-मानीसे कार्य करो। शंका करना, झगड़ना और इस प्रकारके सब काम अत्यन्त निन्द्य हैं। जब हम ऐसे विचार करते हैं और अपने विरोधियोंसे लड़कर और तर्क कर अपनी रक्षा करनेका प्रयत्न करते हैं, हम उन्हींकी श्रेणीमें गिर जाते हैं और अपने सर्व सुखदायिनी जननीकी रक्षा करनेवाली बांहको भूल जाते हैं। हमें क्षमाशील होना चाहिये, इससे हमें शक्ति प्राप्त होती है। केवल संकुचित हृदयवाले क्षमा नहीं कर सकते। जो क्षमा करते हैं वे सागरके समान हैं। एक क्षण भरके लिये भी मत भूलो कि हम सब स्वर्गीय माताकी सन्तान हैं, भले अथवा बुरे, सब उसके

बालक हैं। यदि वह हमारी रक्षा नहीं करती, तब कोई शक्ति नहीं है जो हमको बचा सके ; और जब वह रक्षा करती है, कोई शक्ति नहीं है जो हमको हानि पहुंचा सके। शक्ति धर्म है, इसलिये सावधान रहो, निर्बल मत हो।

प्रिय आत्मन्, इस संसारमें तुम्हें डरानेवाला कोई नहीं है। तुम विश्व-जननीके बालक हो। वह सदा तुम्हारा हाथ पकड़कर तुम्हें मार्ग दिखलाती है, और केवल वही जानती है, कि अपने बालकोंकी रक्षा किस प्रकार करनी चाहिये। जो उस मातामें विश्वास रखते हैं, उनके लिये विपत्ति कहां हो सकती है ? यदि तुम्हारे चित्तमें कोई चिन्ता उदय होती है, साक्षात् मातासे प्रार्थना करो, क्योंकि उसकी प्रेरणासे स्वतंत्र हमारी कोई वाणी नहीं है।

विश्वास, आशा, प्रेम और देव सदृश गुणोंसे भरपूर सत्य भक्त बनो।

स्वर्गीय माता सदा तुम्हारी रक्षा करेगी और अपने कार्यके लिये तुमको शक्ति प्रदान करेगी। तुमको केवल उसकी इच्छानुसार कार्य करनेके लिये तत्पर खड़ा रहना चाहिये। वह स्वयं जानती है और जब वह आकर्षित करती है तब कोई शक्ति नहीं रोक सकती। वे धन्य हैं जो उससे आकर्षित किये गये हैं, क्योंकि जो उसके पवित्र चरणोंमें शरण लेते हैं उनको किसी भी दशामें कष्ट नहीं होता। यहां तक कि जब चारों ओरसे सघन बादलोंके समान विपत्ति आती है, यदि हम उसको नहीं भूलते और धैर्यसे सब सहते हैं तो हम यह जानते हैं कि अपने भक्त

बालकोंके रक्षार्थ वह महान असम्भव कार्यको भी सम्भव कर सकती है। और कोई शक्ति नहीं है, जो हमको दुःख दे सके। इस विश्वमें केवल वही एक शक्ति है।

सर्व श्रेष्ठ भगवन! हमारी श्रद्धा और विश्वास अपनेमें दृढ़ कर। हमको अपनी इच्छापर पूर्ण आत्म-समर्पण करना सिखला। हमको अपना आशीर्वाद, शरण और शान्ति प्रदान कर।

लक्ष्यकी सेवा
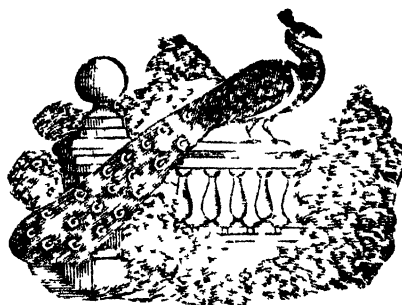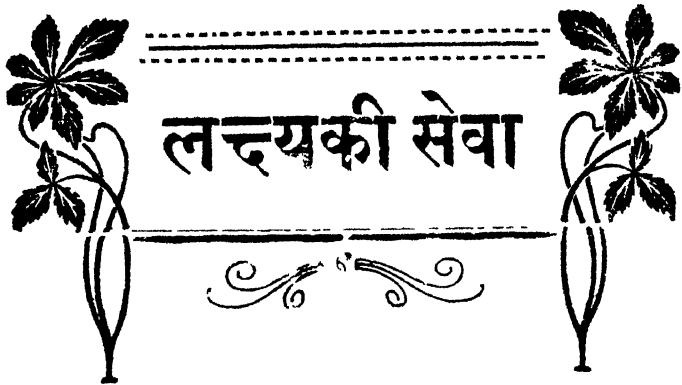
भक्ति ईश्वर (अथवा लक्ष्य) के प्रति प्रगाढ़ प्रेम है, जिसको प्राप्त कर, मनुष्य पूर्ण, अमर और सदाके लिये तृप्त हो जाता है ; जिसको प्राप्त कर, मनुष्य अधिक कामना नहीं करता, किसीसे डाह नहीं करता, परछाइयोंसे सुखी नहीं होता ; जिसको जानकर मनुष्य पवित्रतासे भर जाता है, शान्त हो जाता है और केवल ईश्वरमें ही सुख अनुभव करता है।.... ....नारद प्रेमके ये लक्षण बतलाते हैं ; "जब समस्त विचार, शब्द और कर्म ईश्वरको समर्पित किये जाते हैं,और ईश्वरका किंचित् विस्मरण मनुष्यको अत्यन्त दुःखी करता है, तब प्रेम आरम्भ होता है।"

—नारद-भक्ति सूत्र।

अविनाशी ! भगवन् ! मैं कैसे ही,सहस्रों जन्म जन्मान्तरमें विचरण क्यों न करूं, मेरा अमर प्रेम सदा तुमपर हो।

—विष्णु-पुराण।

तू मेरे हृदयमें ज्वलन्त विश्वास प्रकाश कर, जो ध्रुवके सदृश अटल और अचल पथ-प्रदर्शक हो। हे दीनदयाल ! तू केवल मेरी यह इच्छा पूर्ण कर। इस तरह तेरे प्रेमके अनन्त आनन्दमें निमग्न होकर, अपनेको भूलकर, तुझको दिन रात अपना ही समझूं।

—एक बंगाली गीत।

लक्ष्यकी सेवा.

प्रार्थना ।

हम उसकी दयासे अपनी शक्तियोंका असत्य और अनावश्यक पदार्थोंमें दुरुपयोग करना नहीं, किन्तु उसीकी सेवा करना सीखें, जो हमारा सत्य मित्र है, हमारा सत्य पथ-प्रदर्शक है, हमारा सत्य रक्षक है।

हम उसकी दयासे सुखकी वृथा खोजसे अपना हृदय और मन हटाना और अपना समस्त ध्यान उसकी ओर लगाना सीखें ।

हमारा ईश्वरका निरन्तर चिन्तन हमारे हृदयोंको पवित्र करे और हमारे अन्तर्जीवनमें पवित्रता और शान्ति उत्पन्न करे ।

हम अपने समस्त विचार, शब्द और कर्मोंसे ईश्वरके प्रति सच्चे होना सीखें ।

हमारा विश्वास और भक्ति अविचलित हो ।

हम उस एकको कदापि न भूलें, जिसकी ओर हम अग्रसर हो रहे हैं और जिसमें केवल हम संतोष और विश्राम प्राप्त कर सकते हैं ।

हमारे मन, इन्द्रिय और हृदय, हमारे समस्त कार्य-ज्ञान अथवा अज्ञानताके, शान्त हों और उसकी वाणी सुननेको तत्पर हों ।

हम दृढ़ता, नम्रता और एकाग्र भक्तिसे उसकी सेवा कर सकें ।

लक्ष्यकी भक्ति, सच्चाई और निरन्तर स्वार्थ रहित भावसे सेवा करनेकी अपेक्षा कोई पदार्थ अधिक सुख और प्रसन्नता प्रदान नहीं करता। यदि तुम सत्य भक्त हो तो तुममें प्रतिदिन अत्युत्तम गुणोंका प्रादुर्भाव होगा और संसार तुमसे सीखेगा कि लक्ष्यके प्रति सत्य भक्तिका क्या अर्थ है। समस्त शक्ति जिसका विकास तुम्हारे द्वारा होगा उसी स्रोतसे आयेगी। इसकी धाराको निरन्तर प्रेमकी सेवा, शान्ति और भक्तिसे प्रवाहित रखो। तब यह दृढ़ता पूर्वक बहेगी और इसका बहाव दिन प्रति-दिन शक्तिशाली होता जायगा और इससे जिसका संसर्ग होगा, वह भक्तिके सत्य भावसे धन्य होगा।

संसार गुरुओंसे इतना भरा हुआ है कि प्रत्येक मनुष्य गुरु बनना चाहता है; परन्तु वास्तवमें भक्तिभावकी अत्यन्त कमी है। स्वर्गीय मातासे प्रार्थना करो कि वह तुमको तुम्हारी भक्ति और जीवनमें अटल रक्खे। कीर्ति, प्रशंसा, सम्मान आत्माके लिये हानिकर हैं। इनसे कुटिल अहंकारकी जागृति होती है और आध्यात्मिक उन्नतिमें बाधा पड़ती है। केवल ईश्वर ही ऐसी आपत्तियोंसे हमारी रक्षा करता है। सब प्रताप उसीमें लय होगा। सब कीर्ति, सम्मान और प्रेम जो तुम मनुष्योंसे प्राप्त करते हो, उसके स्वर्गीय चरणोंमें अर्पण कर दो; तब तुम अपने लिये किसी प्रकारके दासत्वकी सृष्टि नहीं करोगे। यही रहस्य है। इसको मत भूलो और तुम कोई भूल नहीं करोगे। यदि तुम अपने जीवनसे इस तरह लक्ष्यकी स्तुति करते हो, तुम

दिन प्रतिदिन अधिक आशीर्वाद प्राप्त करोगे और बहुतोंके लिये आशीर्वाद स्वरूप हो जाओगे।

उत्तम लक्ष्यकी सेवा करनेका रहस्य स्व लाभ और हानिके विचारको वशमें करना है; ये अत्यन्त परिमित हैं। सफलता और असफलताके विचारसे भी ऊपर उठना चाहिये। निरन्तर प्रेम और भक्तिकी सेवासे और उसकी दयासे हम उत्तम गुणोंसे युक्त होते हैं! किन्तु सदा सच्चे रहनेका ध्यान रखना चाहिये। जो सत्यतापूर्वक ईश्वरकी सेवा करते हैं, उनको किसी विपत्तिका सामना नहीं करना पड़ता। अपने जीवनको ईश्वरमें समर्पण करना और उसके इच्छानुसार उसके द्वारा कार्य करना इस जीवनका महान् कार्य है। यही सत्य, स्वातंत्र्य और शान्ति है।

यदि तुम्हारा लक्ष्यके प्रति अटल विश्वास है और तुम सत्यता पूर्वक उसकी सेवा करते हो तो ईश्वर तुमको आशीर्वाद देगा और बहुत मनुष्य तुम्हारे द्वारा आशीर्वाद प्राप्त करेंगे। तब कोई आपत्ति तमको नहीं घेर सकती। इसकी कुछ चिन्ता नहीं कि अन्य मनुष्य तुम्हारी प्रशंसा करते हैं अथवा निन्दा। यदि तुमने परमात्मासे अथवा उसके प्रतिनिधियोंसे आशीर्वाद प्राप्त किया है तो तुमको कुछ अधिक नहीं प्राप्त करना है। यदि ईश्वरकी भक्ति और आशीर्वादका चिन्तामणि तुम्हारे पास है तब और ललचानेवाली वस्तु क्या हो सकती है? तब तुम्हारा जीवन प्रतिदिन अधिक धनी, अधिक आनन्दमय होगा और आनन्दके अनुभवका स्रोत हठात् तुम्हारे अन्तर्जीवनसे बाहर बहने लगेगा।

जब हम सब दशाओंमें स्थिर रहते हैं, तब सुख और शक्तिका आगमन होता है। यही उत्तम पाठ है, जो प्रत्येक मनुष्यको सीखना चाहिये। जबतक हम शक्तिशाली और दृढ़ नहीं है, हम सत्यतापूर्वक कदापि सेवा नहीं कर सकते। अपना पूर्ण चरित्र गठन करनेके लिये हमको अपने जीवनकी भिन्न भिन्न दशाओंका सामना करना होगा। यह अत्यावश्यक है और इसके बिना कभी कोई सत्य चरित्र गठन नहीं हुआ।

* * * *

सदा निःस्वार्थ भाव और मर्यादासे अपने जीवनकी अवस्थाको ठीक रक्खो। स्मरण रहे कि तुम एक साधन हो, जिसके द्वारा लक्ष्य प्रतिबिम्बित हो रहा है। अपनी भक्तिमें अपने देहको पवित्र और एकाग्र रखो, तब तुम्हें कोई बाधा न रोक सकेगी। अपनेको देह, मन, हृदय उनकी समस्त शक्ति और व्यक्तिको पूर्ण रूपसे ईश्वरमें समर्पण कर दो। कोई पदार्थ तुम्हारे मनको अपनी ओर न खींच सके। एक आदर्श भक्त बनो, एक आदर्श शिष्य बनो। कभी मत भूलो कि भगवानके प्रति हमारी कृतज्ञताका कोई पार नहीं है, हम उसके लिये एवं उसके निमित्त जो करेंगे वह थोड़ा ही होगा। अपने जीवनसे उसको सन्तुष्ट करना महान् कार्य है, जो हम कर सकते हैं। उसको विचार, शब्द और कर्म द्वारा असन्तुष्ट करना हमारा बड़ा भारी दुर्भाग्य होगा।

अपने जीवनमे लक्ष्यको प्रकाश करनेका प्रयत्न करो। स्मरण रहे, कि हमारी भूलें और मूर्खताके कर्म बहुधा लक्ष्यको हमारी

दृष्टिसे छिपाते हैं। इसलिये हमको सावधानीसे इस प्रकार अपना चरित्र गठन करना चाहिये, कि लक्ष्यकी रक्षाको ठेस न लगे और ऐसा भी न हो कि लक्ष्य कुछ हो और हम समझ रहे हों कुछ और। सदा, सावधान रहो और ईश्वरसे प्रार्थना करो कि कोई चिन्ता और नैराश्यभाव हमारे द्वारा उत्पन्न न हो। पूर्ण रूपसे अपनेको ईश्वरमें समर्पण करो; तब किसी आपत्तिका अस्तित्व न रहेगा, क्योंकि उसका आशीर्वाद तुममें वास करेगा और प्रत्येक त्रुटि और आपत्तिसे तुम्हारी रक्षा करेगा।

सच्चाई, एकाग्र प्रेम और अटल भक्तिके बिना कोई लक्ष्यकी सेवा नहीं कर सकता। प्रशंसा, कीर्त्ति और सफलताकी अधिकतासे हममें अभिमान उत्पन्न होता है और हम लक्ष्यके प्रति अपना कर्त्तव्य पालन करना भूल जाते हैं। अभिमानी पुरुष कभी सुखी नहीं रहता; किन्तु जो विनयी, सुशील, शान्त और विश्वासी होते हैं, वे सच्चा सुख जानते हैं। व्यक्तिगत आराम और सुखको भूल कर, निःस्वार्थ होनेका प्रयत्न करो और भगवानकी सेवा करो। जब सत्य प्रेम उत्पन्न होता है; तब जिससे हम प्रेम करते हैं उससे कुछ नहीं मांगते, प्रत्युत हम प्रत्येक पदार्थ स्वतन्त्रता पूर्वक देते हैं और ऐसा करनेसे समस्त सुख प्राप्त करते हैं। प्रेम प्रेमके निमित्त करो। इससे दासत्व दूर होगा, स्वातन्त्र्य और आनन्द प्राप्त होगा।

इस संसारमें सत्य प्रेमके समान और कुछ नहीं है। इससे प्रत्येक कार्य पूर्ण हो सकता है और इसके लिये कुछ असम्भव नहीं है। प्रेम जीवन है; इसके बिना दुनिया फीकी है। भक्तिकी

शक्ति आश्चर्यजनक है। हमारे ज्ञानके समस्त मार्गोंको यह उन्मुक्त करता है! सत्य दर्शन प्राप्त करनेका केवल यही एक मार्ग है।

* * * *

भगवान गीतामें कहते हैं कि "अच्छे कर्म करनेवालोंको कभी वास्तविक दुःख नहीं होता।" यह सदा सत्य प्रतीत नहीं होता, क्योंकि सांसारिक दृष्टिसे भले मनुष्य बहुधा अधिक दुःखी दिखायी देते हैं; किन्तु वे अज्ञानतासे दुःख नहीं उठाते। इसलिये भगवानका अभिप्राय है—"मैं उनको प्रकाश देता हूं, जिससे वे कभी वास्तवमें दुःख नहीं उठाते।" जो सत्यका सच्चा और दृढ़ प्रेमी है, वह वास्तवमें धन्य है। ऐसे मनुष्योंमें ही सत्य भक्तिका भाव होता है और वह सच्चाईसे लक्ष्यकी सेवा करता है।

सदा अपनी आंखोंको लक्ष्यके ऊपर रखो, तब तुम जीवनके मार्गमें सुखसे और आनन्दसे चलोगे, और कोई पदार्थ हमको सत्य सुख और शान्ति नहीं दे सकता। क्षणिक सुख अपनी प्रतिक्रियासे सदा विपत्ति पैदा करते हैं और हम उनसे निर्बलता अनुभव करते हैं। अपने हृदयसे प्रार्थना करो, कि हम सदा संसारसे सुरक्षित रहें। सत्य भक्त बनो, आदर्श चरित्र बनो, तब समस्त शान्ति, सुख और सफलता तुम्हारी होगी। साधारण मनुष्य बननेमें क्या लाभ है? यदि तुम अपने चरित्र द्वारा अपने लक्ष्यका दृष्टान्त दिखलाना चाहते हो तो उदारता, शक्ति, पवित्रता और वे सब पदार्थ जो मनुष्यको साधारणसे असाधारण बनाते हैं तुम्हारे जीवनको सम्पन्न करेंगे, तुम प्रतिदिन अधिक शक्ति

सञ्चय करोगे, महान् पदार्थोंको प्राप्तकर इस तरह तुम उस सर्वोच्च गौरवको प्राप्त करोगे।

सत्य प्रेम सदा शक्ति उत्पन्न करेगा और मैं जानता हूं यह करता है। तुमको निर्बलतासे लक्ष्यको नीचे घसीटनेका प्रयत्न न करना चाहिये। यह सत्य प्रेम नहीं है। शक्तिके स्तम्भके समान खड़े रहो। जब हम अपने लक्ष्यकी सेवा करते हुए मरते हैं तब मृत्यु भी मृत्यु नहीं है। वे धन्य हैं जो लक्ष्यके निमित्त अपने जीवनका बलिदान कर सकते हैं। इससे महान कार्य और नहीं है उससे प्रार्थना करो कि वह तुमको शक्ति और सत्य प्रेम प्रदान करे। उससे प्रार्थना करो कि तुम सच्चाईसे उसकी सेवा कर सको।

हृदयकी पवित्रता

मनुष्यको अपने विचार पवित्र रखनेका प्रयत्न करना चाहिये। शान्त विचारोंसे स्वयं अपने अन्दर वास करके, वह अक्षय आनन्द प्राप्त करता है।......वह सुख जो मन प्राप्त करता है। जिसका सारा मल गम्भीर ध्यानसे धुल गया है और जो सुख अभ्यन्तरमें प्रवेश कर गया है उसका वर्णन शब्दोंसे नहीं हो सकता, इसका अनुभव केवल आन्तरिक शक्तिसे ही हो सकता है।

—मैत्रायणी-ब्राह्मण-उपनिषत्।

श्रेष्ठ तपस्या और पवित्र मन और हृदयसे उस (भगवान) को प्राप्तकर, बुद्धिमान पुरुष पुनः कभी मृत्युके निकट न जायगा। इसलिये बुद्धिमान लोग "अपनेको भगवानमें समर्पण" करनेके कार्यको समस्त तपस्याओंसे श्रेष्ठ बतलाते हैं।

—तैत्तिरीय उपनिषत्।

समस्त देह धारियोंके हृदयमें बैठा हुआ, वह समस्त प्राणियोंका आत्मा है, वह समस्त सृष्टिका शासक है, और समस्त प्राणी उसमें लय हो जाते हैं।

—यजुर्वेद-आरण्यक।

वह श्रेष्ठ ब्रह्म, सबका आत्मा, विश्वका परम धाम, सूक्ष्मातिसूक्ष्म और अनन्त है; वह स्वयं तू है और तू वह है।

—कैवल्य उपनिषत्।

हृदयकी पवित्रता ।

—:—:—

प्रार्थना ।

सर्व श्रेष्ठ देवी, जड़ और चैतन्यकी माता, आ, हममें अपनेको प्रकट कर ।

तू अनादि है, निराकार है, किन्तु तेरा आगमन होता है । जब तेरी सचमुच पुकार होती है, उस पुकारका तू उत्तर देती है ।

तू समस्त अनुग्रह और विचारकी देनेवाली है ।

तू सबका उद्गम है । तू ही सब है ।

तेरी दयासे गूंगा वाचाल होता है, लङ्गड़ा दौड़ता है ।

तू ही केवल कर्ता है ।

हमको शक्ति, पवित्रता और उत्साह प्रदान कर ।

हमको सिखला, तुझमें कैसे समर्पण करना चाहिये, तुझको कैसे पुकारना चाहिये ।

तू ही सर्वश्रेष्ठ स्वामिनी है ।

तू ही समस्त आनन्दका स्रोत है ।

अपनेको हममें प्रकटकर । हमारे निकट आ ।

हमारे हृदयमें अपने स्वर्गीय दर्शन दे ।

हमको अपनी शान्ति और आशीर्वाद प्रदान कर ।

विशुद्ध और निःस्वार्थ चरित्रके बलसे प्रत्येक पदार्थके ऊपर विजय प्राप्त होती है । जब तुम्हारे पास पवित्रता और निस्वार्थता

है, ज्ञानोदयके लिये फिर और किसी पदार्थकी आवश्यकता नहीं। देहकी पवित्रता और विचारसे बढ़कर शीघ्र आत्माको शान्ति और प्रकाश देनेवाला और कोई पदार्थ नहीं है; और आत्माके ऊपर दु:खकी कालिमा छानेवाला अपवित्रतासे अधिक बलवान भी और कोई नहीं है। यह सदा ऐसा ही हुआ है। यह अवश्यम्भावी नियम है। सत्य एक और अपरिवर्त्तनशील है। इसको प्राप्त करनेके लिये, इसकी पूजा करनेके लिये और इसके निकट खड़े रहनेके लिये निर्भयताकी आवश्यकता है। इसको जानो और सत्य और पवित्रताके भावसे बलवान बनो।

स्मरण रहे कि अन्तमें सत्यकी अवश्य विजय होगी; इसके विपरीत नहीं हो सकता। मनुष्यकी नहीं किन्तु स्वर्गीय माताकी प्रेरणा पथ-प्रदर्शन कर रही है। मनुष्योंको अपनी शक्तिका उपयोग करने दो और अनुभव प्राप्त करने दो। किन्तु जिनके हृदय पवित्र हैं, केवल वे ही स्वर्गीय प्रतापको देखेंगे। पवित्रताके समान और कुछ नहीं है, इसकी शक्ति विशाल है। इसके द्वारा मनुष्य अनन्त दर्शन प्राप्त करता है। किन्तु इसको प्राप्त करना महा कठिन है। सदा इस अपूर्व मणिकी प्रतिष्ठा करो और अपनी समस्त शक्तिसे इसकी रक्षा करो। किन्तु यह उसीके लिये सम्भव है जो भगवानसे निरन्तर प्रार्थना करता है और जिसने उसकी दया प्राप्त कर ली है। हृदयकी सच्चाई और शान्तिसे प्रार्थना करो, तब तुम कभी विफल न होगे।

सदा स्मरण रहे कि जीवनमें पवित्रता और आत्म-संयम

अमूल्य पदार्थ है। जबतक इन्द्रियां पूर्ण रूपसे तुम्हारे अधीन नहीं हैं और हृदयमें पवित्रता नहीं है, तबतक तुम आध्यात्मिक मार्गमें आगे नहीं बढ़ सकते। किन्तु जब ये तुम्हारे अधिकारमें हो जायं, तुमको कोई हानि नहीं पहुंचा सकता। सदा सावधान रहो और स्वर्गीय मातासे प्रार्थना करो कि वह तुमको समस्त सांसारिकता और अहङ्कारसे बचावे। सहायता और पथ-प्रद-र्शनके लिये उसकी ओर निहारो। वह तुमको पवित्र और शक्ति-शाली बनावेगी। और अपनी शक्तिसे तुमको अधिकाधिक प्रेरित करेगी। जबतक उसका वरद् हस्त तुम्हारे ऊपर है तबतक तुम सुरक्षित हो।

निःसंगताके अभ्याससे आत्म-संयम प्राप्त होता है। संग या आसक्ति अभ्यासकी बात है, और कोई नया अभ्यास डालनेसे पुराना अभ्यास छूट जाता है। सैकड़ों बार तुम हारोगे, पर जबतक तुम संयम न सीख लो तबतक तुम शान्ति प्राप्त नहीं कर सकते। इसलिये अभ्यास करनेमें धैर्यकी आवश्यकता है। तुमको निरन्तर प्रयत्न करना चाहिये, जबतक तुम पूर्णता प्राप्त नहीं करते, जहां हो वहींसे अभ्यास आरम्भ करो। किसी बातकी शिकायत मत करो, आगे बढ़े चलो। हजार बार हार जाओगे, तो भी कुछ परवा न कर तुम्हें अपनी उन कामनाओं और मनोविकारोंको लड़ कर जीतना होगा जो तुम्हारे मान सरोवरमें उथल पुथल मचाकर थाहमें बैठे हुए तुम्हारे ही ईश्वरालयका तुम्हें दर्शन नहीं होने देते। जब तुम असफल होते हो तो यह मत सोचो, कि जो कुछ तुमने

किया वह सब विफल हुआ। नहीं; प्रत्येक बार जब तुम असफलतासे उठते हो, तुम उतनी शक्ति और प्राप्त करते हो।

अधीर मत हो; जो कुछ तुम्हारे अन्दर है, वह समय पर स्वयं प्रकाश होगा। संयमसे कार्य करो। संयम आरोग्य, सुख और शान्ति प्राप्त करनेका एकमात्र साधन है। जब तुम इस तरह कार्य करोगे, तब तुम्हारे समस्त प्रयत्न सफल होंगे।

+ + + +

जो कार्य तुम करते हो, वह उस परिस्थिति पर निर्भर है जो तुम उत्पन्न करते हो। सबसे प्रथम तुम्हें अन्तर्जगत और बहिर्जगतको अवस्था पवित्र कर लेनी होगी। इसमें कोई ऐसी बात न रह जाय जो बखेड़ा उत्पन्न करे, विकार उत्पन्न करे। तुम्हारी स्थिति और आसपासकी स्थिति ऐसी होनी चाहिये जो तुमको प्रोत्साहित करे, और तुममें जो उत्तमांश हैं उसे प्रकट करे। आध्यात्मिक जीवनके लिये तो यह अत्यावश्यक है, क्योंकि यह जीवन सूक्ष्म है। इसके लिये पूर्ण एकाग्र भक्तिकी आवश्यकता है, क्योंकि इसीसे उपयुक्त परिस्थितिकी सृष्टि होती है। सारे गिरजों और मन्दिरोंका यही अर्थ है ; इसके लिये ऐसे स्थानकी आवश्यकता है, जहांकी अवस्था ऐसी हो कि, जाते ही पवित्र भाव जाग उठे। हम कोलाहल रहित स्थानमें क्यों बैठते हैं ? हम क्यों पवित्र गीत गाते हैं ? इसलिये कि इससे पवित्रता और शान्तिका संचार होता है। और उससे हमको अपने विचारोंको उन्नत करनेमें सहायता मिलती है।

प्रथम तुमको अपने अभ्यासमें स्थिर रहना कठिन प्रतीत होगा; किन्तु जितना ही अधिक तुम प्रयत्न करोगे, उतना ही अधिक तुम दृढ़ होगे। निःसंग रहनेका अभ्यास किये बिना कोई धार्मिक नहीं हो सकता। सच्चा साधु स्वर्गीय और सांसारिक दोनों सुखोंको त्याग देता है और यही धार्मिक होनेका प्रथम सोपान है। यदि तुम अपना लङ्गर जलमें डालते हो तो तुम अपनी नावको लङ्गरकी तरफ खींचोगे पर नाव आगे न चलेगी, चलानेका प्रयत्न विफल होगा। इसी तरह यदि तुम अध्यात्मके जलमें देह और वाह्य पदार्थोंके स्वार्थका लङ्गर डालते हो तो तुम कितना ही कठिन प्रयत्न क्यों न करो, तुम आध्यात्मिक क्षेत्रमें उन्नति नहीं कर सकते।

तथापि सांसारिक जीवनमें रहनेसे तुम आध्यात्मिक जीवनका मूल्य अधिक समझ सकोगे और ज्ञान प्राप्त करोगे, जिससे तुम दूसरोंकी भी सहायता कर सकोगे। प्रत्येक पदार्थ हमारी वृत्ति और हेतुपर अवलम्बित है और जब ये ठीक हैं और निःस्वार्थ हैं तो हम भी पूर्णरूपसे सुरक्षित हैं।

\+ + + +

विश्वजननी हमें ऐसा आशीर्वाद दे कि जहां हम जायं, सुख, प्रभा और शान्तिके अतिरिक्त हमसे और कोई बात न हो। वह हमको इतना शक्ति सम्पन्न और पवित्र हृदय बनावे, कि हम उनके लिये जो हमारे निकट आवें, सुख और आनन्द-स्वरूप हों। यह अवस्था हम निःस्वार्थता और पवित्रताके अभ्याससे प्राप्त करते

हैं। यह उनका अनुभव ज्ञान सांख्य जीवनका अभ्यास किया है। हम उसको कदापि नहीं भूल सकते जो हमको सत्य पदार्थ का एक किरण भी प्रदान करता है। अन्तर्जीवन जिसमें हम महान् प्रसन्नता और आनन्द प्राप्त करते हैं, सत्य धर्म है, क्योंकि धर्मका अर्थ है अपने स्वर्गीय स्वभावको प्रकाश करना। मुझे विश्वास है कि माताके महान् आशीर्वादसे वह पवित्र स्थान (मन्दिर) तुम्हारे लिये खुला हुआ है। उस पवित्र आत्मामें, समस्त प्रेम, भक्ति और आदर भावसे प्रवेश करो, दिन रात पूजा करो और इस तरह तुम समस्त अपूर्णताओंसे मुक्ति लाभ करोगे।

यह पवित्रताकी शक्ति है जिससे ईश्वर-दर्शन होते हैं। क्या जो सोये हुए हैं उनके लिये बुद्ध अथवा मसीह प्रकट नहीं हो सकते? हां, वे प्रकट हो सकते हैं, परन्तु वे बबूरके पेड़में आम लगाना नहीं चाहते। वे प्रकृतिके विरुद्ध कार्य करना नहीं चाहते। हमको उनके लिये खड़े होना चाहिये। ईश्वरकी दया सबपर है, किन्तु वे जो तैयार हैं, जिनके हृदयमें सत्य भक्ति है, इसको ग्रहण करनेमें समर्थ हो सकते हैं।

वह धन्य है जिसको भगवानने प्रेम और भक्तिसे सम्पन्न किया है। मनुष्य सच्चाई और आत्म-बलिदानसे इन उत्तम पदार्थोंको प्राप्त करनेमें समर्थ होता है। जिसमें ये दोनों हैं वह धन्य कहा जा सकता है। यद्यपि भगवान् सबके लिये समान रूपसे दयालु हैं, फिर भी जबतक तुम सच्चे और पवित्र नहीं हो, उसका प्रेम और आशीर्वाद लाभ नहीं कर सकते।

स्वर्गीय माता तुम्हारी भक्तिके पौधेका सबसे उत्तम आशीर्वादसे सींचे और इसमें पवित्र और निःस्वार्थ प्रेमके पुष्प खिलावे और इस तरह सबको अपने स्वर्गीय सुगन्धसे आकर्षित करे।

\+ + × +

हमारे हृदय इतने पवित्र, शान्त और निर्मल हों कि वे उस प्रकाशके दाता, जीवनके दाता, अपने अस्तित्वके स्रोतके हमें दर्शन दें। वे इतने शान्त हों कि हमारी आत्मा स्वर्गीय संगीतको सुन सके। आत्माके कान साधारण गायनके सुरसे तृप्त नहीं होते; वह स्वर्गीय संगीतके सुरको सुनना चाहती है। ईश्वरके प्रेमी उसका शब्द सुनकर आनन्द प्राप्त करते हैं और उसके प्रतापकी महिमा गाकर वे आत्माको तृप्त करते हैं। आत्माकी क्षुधा और तृष्णाको तृप्त करनेका और कोई मार्ग नहीं है। जो मानवी है, जो पार्थिव है, वह कदापि अनन्त संतोष नहीं दे सकता; किन्तु शान्तिकी घड़ीमें जब हमारी समस्त इन्द्रियाँ शान्त हैं, जब हमारा मन शान्त है, जब पुरुष, आत्मा, भगवानके अतिरिक्त और कोई हिलनेका साहस नहीं करता - ऐसी शान्तिमें एक स्पर्श, एक शब्द वह आत्मानन्दका अनुभव करा देता है। उसकी उपस्थिति सबको वशमें करती है। समस्त विचार, समस्त शब्द, समस्त कर्म उसकी आज्ञासे शान्ति धारण करते हैं। तब हम केवल उसकी वाणी आत्माको संबोधन करती सुन पड़ती है। तब हम केवल उसको हृदयमें प्रकाशमान देखते हैं। तब हम उसके दर्शन करते हैं, हम उसका स्पर्श करते हैं। तब समस्त पार्थिव

पदार्थ, समस्त बहिर्जगतका लोप हो जाता है और आत्मा स्वर्गीय आनन्दका भोग करती है। भगवानके दर्शन करनेके लिये अन्तर और वाह्य जगतमें शान्ति होनी चाहिये। वहाँ अशान्ति और घर्षण न होना चाहिये। परम पुरुषके दर्शन होते ही मनुष्यका अहंकार नष्ट हो जाता है और वह ईश्वरमें लीन हो जाता है। जब वह अपने दिव्य नेत्रोंसे भगवानकी महिमा देखता है, जब वह अपने सम्मुख महामहिमान्वित प्रखर प्रकाश पुञ्जको देखता है तो पूज्य भावसे विस्मयविमुग्ध होकर मस्तक नवाता है। इस तरह पवित्र हृदयमें ईश्वर दर्शन होते हैं।

हे चिन्मूर्ते, परमात्मन्! हमें पवित्रताके मार्ग पर ले जा। हमें धर्मके मार्गमें ले जा। भगवन्! हम तुझमें और आत्मामें एकता अनुभव करें। हमारा हृदय शुद्ध कर जिसमें हम अपने अन्दर ब्रह्मज्ञानकी किरण प्राप्त करें। हमको वह पवित्रता और शुद्धता प्रदान कर जिससे परमात्मासे समीपता होती है। हमारे समस्त आध्यात्मिक अभ्यास इतने सच्चे, इतने स्वतंत्र हों कि अपने प्रार्थना, उद्यम और विचारोंसे हम तेरे निकट आवें और तुझमें सादृश्य अनुभव करें, तुझमें अपनी सत्य आत्मा और अस्तित्वका अनुभव करें। हम कभी पराधीन न हों। हम समस्त पदार्थ तेरी चरणमें अर्पण करते हैं। मैं और तू एक हैं।

धर्म-ग्रंथ-माला।

१ इस सीरीजके निकालनेका मुख्य उद्देश्य साहित्य सेवा है।

२ आरम्भमें केवल ॥) आठ आना प्रवेश फी भेजकर अपना नाम स्थायी ग्राहकोंमें दर्ज करा लेनेसे सीरीजसे निकलनेवाले एवं निकले हुए सब ग्रंथ पौनी कीमतमें दिये जायेंगे।

३ प्रवेश फी वापस नहीं दी जायगी।

४ इस सीरीजसे हर प्रकारके उत्तमोत्तम ग्रंथ धार्मिक सामाजिक, राजनैतिक, शिक्षाप्रद उपन्यास, गल्प, प्रहसन, नाटक इत्यादि २ देशकालके अनुसार प्रकाशित किये जायेंगे।

५ पुस्तक निकलनेकी सूचना स्थायी ग्राहकोंको १० दिन पूर्व दी जायेगी, तद्रूपश्चात् पुस्तक उनकी सेवामें पौनी कीमतमें वी० पी० भेजी जायेंगी।

६ यद्यपि जन साधारणके लिये प्रवेश फी ॥) आठ आना मात्र है, किन्तु राजा, रईस और प्रतिष्ठित व्यक्तियोंसे उनके सम्मानार्थ प्रवेश फी अधिक होगी। उनके लिये प्रवेश फी क्या होगी यह उन्हींके रूचि पर निर्भर है।

७ पुस्तकें ग्राह्य और उपादेय होंगी।

नीचे लिखे ग्रन्थ प्रकाशित हो चुके हैं :

१—भक्तिका मार्ग।

मानव चरित्रको उदार, कर्मवीर, धर्मवीर बनानेवाली हिन्दीमें अपने ढंगकी यह पहिलो पुस्तक है। मूल्य ॥)

कुछ सम्मतियां।

स्वामी परमानन्दने 'द्दी पाथ आफ डिवोशन' नामकी एक छोटी पुस्तक अंगरेजीमें लिखी है। आपने अमरीकामें ही उसको प्रकाशित किया और वहीं उसका प्रचार भी हुआ। उसी पुस्तकका यह हिन्दी अनुवाद है। पुस्तक बहुत अच्छी है। स्वामीजीने भक्तिका मार्ग बहुत ही अच्छे ढंगसे समझाया है। अनुवादकी भाषा मनोहर और सरल है। --सरस्वती प्रयाग।

यह पुस्तक श्रीस्वामी परमानन्द प्रणीत The Path of Devotion (द्दी पाथ आफ डिवोशन) का हिन्दी अनुवाद है। स्वामी परमानन्द श्रीरामकृष्ण मिशनके एक सुप्रसिद्ध कार्य्यकर्त्ता हैं उन्होंने इस पुस्तकमें वेदान्त विषयका प्रतिपादन किया है। इसे पढ़कर पाठकोंकी भक्ति-वृत्ति जागृत होती है। इसकी भूमिकासे विदित होता है कि मूल ग्रन्थके अमेरिकामें पांच संस्करण निकल चुके हैं। अनुवाद स्वतंत्र है, भाषा भी ओजस्विनी है। पुस्तक संग्रहके योग्य है। —प्रभा कानपुर।

भक्तिका मार्ग— मूल पुस्तक "दि पाथ आव डिवोशन" अँग्रेजीमें है जिसे स्वामी परमानन्दने लिखा। यह पुस्तक उसका अनुवाद है। पुस्तकमें भक्ति, स्थिरता, निर्भयता, आत्म-समर्पण आदि प्रबन्ध है जो हृदयाकर्षक भावोंसे भरे हुए हैं। अन्तमें "मातासे प्रार्थना" है जो श्लोकबद्ध संस्कृतमें है और जिसका हिन्दी अर्थ भी नीचे दिया है।

भारतमित्र २ जून १९२१

भक्तिका मार्ग--अँग्रेजीमें लिखी "दी पाथ आफ डिवोशन" का यह हिन्दी अनुवाद है। यह पुस्तक प्रसिद्ध वेदान्त प्रचारक स्वामी विवेकानन्द महाराजके एक शिष्यकी लिखी है। इस पुस्तकमें भक्ति, पवित्रता, स्थिरता, निर्भयता, आत्म-समर्पण आदि विषयोंका अच्छी तरह प्रतिपादन किया गया है, कि किस उपाय और भावनासे भक्ति-रङ्गमें रङ्गित होकर चरित्रका गठन हो सकता है। पुस्तककी छपाई सफाई तथा कागज बहुत ही अच्छा है।

"हिन्दी बङ्गवासी" कलकत्ता,
१७, जनवरी १९२१

भक्तिका मार्ग--रामकृष्ण मठके प्रसिद्ध शिष्य स्वामी परमानन्दजीका अँग्रेजी पुस्तक "पाथ आफ डिवोशन" का यह स्वतन्त्र हिन्दी अनुवाद है। पुस्तकके आरम्भमें स्वामी राघवानन्दजीने छोटीसी पर ओजस्विनी भूमिका लिखी है। पुस्तक आध्यात्म वाद लिये हुए हैं। किस प्रकार मनुष्य पवित्रता, स्थिरता, निर्भयताका अवलम्बन करता हुआ आत्म समर्पण द्वारा उस अनन्त भक्तिको प्राप्त करता है जिसे जानकर फिर कुछ जाननेकी इच्छा नहीं रहती है, इसका दिग्दर्शन विस्तृत रूपसे किया गया है। मातृ-भक्तिका उपदेश भी मनन करने योग्य है। अनुवादकी भाषा भी अच्छी व मर्म्म स्पर्शी है। छपाई वगैरह सब सुन्दर है।

शक्ति अलमोड़ा ५ अक्टूबर १९२०

The book is the Hindi translation of the 'Path of Devotion' by Swami Paramananda. The chief characteristic of the book lies in its nice and consistent Hindi rendering and one can atonce catch up the spirit of the original book. Swami Paramananda, a Ramkrishna Mission Sanyasi working in America has nicely dealt with the path of devotion in all its aspects and the book under review, we trust, will help the Hindi reading public to understand the complex niceties of the path of devotion as outlined by Swami Paramananda. The book is written in a charming style & we hope it will be much appreciated by the reading public.

—THE SERVANT.

A translation into Hindi of the Path of Devotion by Swami Paramananda. The original book contains discourses on the religion of love and the means of acquiring it in life. The translation is well executed and retains much of the spirit of the original. We recommend it to the Hindi reading public.

—PRABUDDHA BHARAT.

The book named 'Path of Devotion' written by Swami Paramanand (The desciple of Swami Vivekananda) who is at present the President of

the Vedanta section of the Ramkrishna Paramhansa school at America, is a well known book. It is the Hindi Version by S. Dharmananda. It is priced at as -/8/-

—THE MODERN REVIEW.

२—जीवन और मृत्युका प्रश्न।

प्रस्तुत पुस्तक बोष्टन अमेरिकाके रामकृष्ण मिशन वेदान्त केन्द्रके अध्यक्ष, सुप्रसिद्ध आध्यात्मिक लेखक स्वामी परमानन्द कृत "दी प्रोब्लेम आफ लाइफ एण्ड डेथ" नामक पुस्तकका यह हिन्दी भाषान्तर है। मनुष्य मात्रके हृदयमें जीवन और मृत्युके प्रश्नके अतिरिक्त और कोई आवश्यकीय प्रश्न नहीं है और इस विषयको जाननेकी लोगोंके हृदयमें बड़ी उत्कण्ठा रहती है। इस पुस्तकको पाठ करनेसे जीवन, मरण, प्रारब्ध, पुनर्जन्म, मृतोत्थान आदि विषयोंका अच्छी तरह हृदयमें विकाश हो जाता है। यह पुस्तक हरएक हिन्दी भाषा-भाषियोंको अपने पास रखनी चाहिये। मूल्य ।-) डाक खर्च अलग।

कुछ सम्मतियां।

जीवन और मृत्युका प्रश्न--मूल पुस्तक "दी प्रोब्लेम आफ लाइफ एण्ड डेथ" अंग्रेजीमें है जो अमेरिका प्रवासी श्रीस्वामी परमानन्दकी रचना है। इसका यह हिन्दी अनुवाद है। जीवन, मरण, प्रारब्ध, पुनर्जन्म, मृतोत्थान आदि विषयोंकी स्नेह-स्निग्ध चर्चा है। अनुवाद भी हार्दिक है और पुस्तकका विषय मनन करने योग्य है। भारतमित्र कलकत्ता, १२।७।२१

जीवन और मृत्युका प्रश्न—यह पुस्तक अमेरिकाके रामकृष्ण मिशन वेदान्त केन्द्रके अध्यक्ष स्वामी परमानन्दके "दी प्रोब्लेम आफ लाइफ एण्ड डेथ" नामक पुस्तकका अनुवाद है। इसमें बड़े अच्छे ढङ्गसे सुन्दर और सरल भाषामें भक्ति मार्गका मर्म समझाया गया है। पुस्तक पढ़ने योग्य है।

कलकत्ता समाचार ७ जुलाई १९२१

३—आत्म-संयम।

यह पुस्तक सुप्रसिद्ध आध्यात्मिक लेखक, बोष्टन अमेरिकाके वेदान्त केन्द्रके अध्यक्ष स्वामी परमानन्दकी "सेल्फ मास्टरी" नाम की पुस्तकका स्वतन्त्र हिन्दी अनुवाद है। स्वामी परमानन्दजीने यह पुस्तक अमेरिकामें ही लिखी और वहीं इसका प्रचार हुआ। मूल पुस्तक अँग्रेजीमें है। हिन्दी संसारके वे मनुष्य जो आंग्ल भाषा न जाननेके कारण इनके रसास्वादनसे वञ्चित रहते हैं उनके लिये तथा राष्ट्रभाषा हिन्दीको ऐसे आध्यात्मिक उन्नति कारक ग्रन्थोंसे सुशोभित करनेकी दृष्टिसे इन ग्रन्थोंका हिन्दी भाषान्तर किया गया है इसमें आत्म-विजय, आत्म समर्पण, अपनी आत्माकी शक्तिको किस प्रकार बढ़ा सकते हैं। इत्यादि विषय खूब अच्छे ढङ्गसे रखे गये हैं। किताब मनन एवं संग्रह करने योग्य है। मूल्य ।~) आना डाक खर्च अलग।

कुछ सम्मतियां।

आत्म-संयम—श्रीस्वामी परमानन्द कृत "सेल्फ मास्टरी" का हिन्दी अनुवाद है। स्वामी परमानन्दजीने इस पुस्तकमें आत्म

—संयमके मार्ग और उससे प्राप्त होनेवाली शक्ति तथा सुखका सरल और सरस शब्दोंमें वर्णन किया हैं। ऐसी पुस्तकें पढ़नेमें जो समय बीतता है वह अकारथ नहीं जाता, उससे सुख और शक्तिको वृद्धिका साधन होता है, अनुवाद भी सरस और सरल शब्दोंमें किया है।

भारतमित्र कलकत्ता, २।८।१९२१

आत्म-संयम – यह पुस्तक बोष्टन शहर रामकृष्ण मिशनके अध्यक्ष स्वामी परमानन्दको अँग्रेजी पुस्तक "सेल्फ माष्टरी" का सरल हिन्दी अनुवाद है और पुस्तक वास्तवमें बड़े कामकी है। विशेष कर वर्त्तमान समयमें तो इसे पढ़कर हिन्दी भाषाभाषी बहुत लाभ उठा सकते हैं। स्वामीजीने विषय उत्तम रीतिसे समझाया है और अनुवादमें भाव बिगड़ने नहीं पाये।

कलकत्ता समाचार ४।६।२१

४—**शान्ति और आनन्दका मार्ग**—ग्रंथ आपके हाथमें है इसको उपयोगिता स्वयं देख सकते हैं।

देशबंधु चित्तरंजनदास

का

सामयिक जीवन चरित्र और उनके व्याख्यान छप रहे हैं शीघ्र प्रकाशित होंगे ।

सूचना—भी० पी० लौटानेसे डाक व्ययकी हानि ग्राहकके जिम्मे होती है। कोई पुस्तक लेनी न हो तो सूचना पाते ही मनाही लिख भेजें।

स्थाई ग्राहकोंको पत्र व्यवहार करते समय अपना ग्राहक नम्बर अवश्य लिखना चाहिये अन्यथा पत्रोत्तर लिखनेमें विलम्ब होगा।

मैनेजर—

धर्म-ग्रन्थ-माला कार्यालय,

बड़ाबाजार कलकत्ता।